साई का आनन्द पथ

SAI KA ANAND PATH

जुलाई 2011

SAI KA ANAND PATH
QUARTERLY MAGAZINE

July – 2011

Correspondence Address
SAI KA ANAND PATH
Sri Anand Sai Marg
Besides Ananda Apts.
Clarke Town,
NAGPUR-440 004.(M.S.)
Ph.No. 6574825
Cell : 9823134765
e-mail :
saipublications@rediffmail.com

Published & Edited by :
Ranveer Taneja

SUBSCRIPTION :
Life (25 Years) : Rs. 1400/-
5 Years : Rs. 400/-
2 Years : Rs. 200/-

Printed at :
Mudrashilpa Offset Printers,
Nagpur
Type setting :
Lipi Systems
Dhantoli, Nagpur.
M.: 9921614855

Please quote your Registration No. while corresponding.

साईं का आनंद पथ

CONTENTS / अंतरंग

हिन्दी विभाग

अमृत सन्देश (Nectar Message)	...	1
कलाम-ए-साईं	...	2
समर्पण	...	3-8
आनंद का पथ	...	9-15
साईं शंकर	...	16
नाम की शक्ति	...	17-20
श्री गुरु महिमा	...	21-25
साईं दत्त भगवाना	...	26
माँ का आँचल	...	27-29
भेद कहाँ से आया	...	30-33
राम नाम आधारा	...	34-37
जै मात सीते	...	37
अर्पित जीवन	...	38-40
साईं नरसिंहम्	...	40

English Section

Divine Path	...	41-42
Glimpses of Truth	...	43
Gems of Wisdom	...	44-45
Your Own Page	...	46-48

May Sai's Blessings Enlighten you.

The editor does not accept responsibility for views expressed in articles published.

अमृत-सन्देश

NECTAR MESSAGE

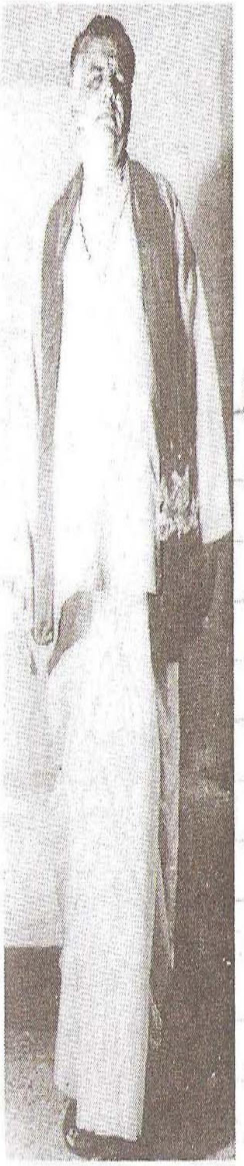

(The Message of Sri Anand Sai penned in His own hand)

The all-pervasiveness of Kali Maa.

All is Maa, All is Maa,
You are Maa,
He is Maa,
I am Maa,
All are Maa,
What a wonderful phenomena
Right is Maa,
Left is Maa,
Maa in front,
Maa behind,
Look within,
You shall find.
Up is Maa,
Maa below,
By Her Grace,
You can know.

The All-Pervasiveness of Kali Maa

All is Maa, All is Maa,
You are Maa,
He is Maa,
I am Maa,
All are Maa,
What a wonderful Phenomena.
Right is Maa,
Left is Maa,
Maa in front,
Maa behind,
Look within,
Your shall find.
Up is Maa,
Maa below,
By Her Grace,
You can know.

Om Sri Sai

कलाम-ए-साईं

(श्री साईं गीता में से)

जाम-ए-वाहिदत पिला के ऐ साकी,
नशे में चूर चूर कर दिया हम को।
इस बेख़ुदी के आलम में,
मख़मूर कर दिया हम को।
जलवा दिखा के ऐ जलवागर,
पुरसरूर कर दिया हम को।
अलग अपने को समझे बैठे थे,
मिला के अपने में
भरपूर कर दिया हम को।।

"ॐ श्री साईं"

वाहिदत – एकता
साकी – जो अमृत पिलाए (सत्‌गुरु)
आलम – दुनिया
मख़मूर – नशे में
जलवा – दिव्य दर्शन
पुरसरूर – आनंद से भरपूर

समर्पण

कहते हैं तुम दूर कहीं, किसी लोक में रहते हो ।
क्या अजब सी बात है, करीब मेरे फिर कैसे हो ।।

प्राणप्यारे, परमदयालु, पतित पावने, भव भय हरणे, ज्योतिस्वरूपे, पाप ताप नाशके, सत् मार्ग दर्शने, अजर, अमर, अविनाशी, निराश्रयों के आश्रय, निरलजों की लाज, निओटों की ओट, निमानियों के मान, सत्गुरु गरीब नवाज़ साईं अमृत पुत्र श्री आनंद साईं जी व गुरु माता के परम पावन श्री चरणों में नतमस्तक हो श्री गुरु पूजा की पावन बेला पर आप सभी से एक बार फिर मुख़ातिब हैं। आप सभी गुरु प्रेमियों को इस पावन अवसर पर हमारा अभिवादन है। सत्गुरु के प्यारों के लिए वैसे तो साल का हर दिन, दिन का हर लम्हा उनके सत्गुरु के चरणों में समर्पित रहता है। फिर भी वर्ष का एक दिवस ऐसा भी हमारे पूर्वजों ने निश्चित किया है जिस दिन हम अपने आप को एक बार फिर पूर्ण रूप से सत्गुरु दीन दयाल के श्री चरणों में पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ पुनः समर्पित करते हैं। यह परम पावन दिवस है गुरु पूर्णिमा का दिवस, गुरु पूजा का दिवस। इस वर्ष यह परम पावन पर्व दि. 15 जुलाई 2011 शुक्रवार को मनाया जाएगा। श्री आनंद साईं दरबार में इस उत्सव की शुरुवात दि. 13 जुलाई को होगी और समापन 15 जुलाई गुरु पूजा के दिवस रात को होगा।

सत्गुरु की महिमा शब्दों में लाना नामुमकिन है। उनकी महानता शब्दों में पिरोई ही नहीं जा सकती। हमारे धर्म ग्रंथ भी सत्गुरु की महिमा बखान करते-करते रह गए और अंत में नेति नेति कह कर थम गए। इन्सान शब्दों की रचना ही नहीं कर सका जिससे सत्गुरु की महिमा का बखान किया जा सके। सत्गुरु मात स्वरूप से अपने बच्चों पर ममता बरसाते हैं। ब्रह्मा जी के रूप से उनके

अंदर भक्ति भाव जागृत करते हैं। विष्णू जी के स्वरूप से उनका पालन पोषण करते हैं और शिव जी के रूप से उनके अहंकार का नाश करते हैं। ईश्वर की सारी शक्तियाँ सतुगुरु के पावन स्वरूप के अंदर से काम करती हैं। दिखने को वै इन्सान होते हैं लेकिन सच्चाई तो यह है कि उनका न कोई आद है न अंत है। वे पंचतत्व से परे पूरण पुरुष विधाता हैं। सतुगुरु का सत्स्वरूप कोई विरला ही उनकी दया से ही जान सकता है। भाग्यवान हैं वो जीव जिन्हें पूरण सतुगुरु मिलते हैं। परम भाग्यवान हैं वो जीव जिन्हें पूरण सतुगुरु का प्यार मिलता है। सतुगुरु के प्यार में वो शक्ति है जो सोयी आत्माओं को जगाकर अपने पावन मार्ग पर चलाकर उनके अस्तित्व को मिटाकर अपने में विलीन कर लेता है। सफर दो से शुरु होता है। सतुगुरु और शिष्य से शुरु हुआ यह सफर अंत में एक सतुगुरु के सत्स्वरूप में जाकर खत्म होता है। शिष्य अपना अस्तित्व खोकर सतुगुरु में समाकर एक हो जाता है। यही तो प्रीत की रीत है।

राँझा राँझा करदी नी मैं आपो राँझा होई ।
सदो नी मैनू हीर न कोई मैं ते राँझा होई ।।

प्राणप्यारे सतुगुरु श्री आनंद साईं जी कहते थे कि ईश्वर को पाने का सबसे सरल मार्ग प्रेम का है। प्रेम, ईश्वर से सच्चा सुच्चा प्रेम, निष्काम प्रेम, प्रेम केवल प्रेम की खातिर अगर हमारे अंदर गुरु दया से ऐसा प्रेम जागृत हो जाए तो हमारी बात सहजता से बन जाएगी। ईश्वर के प्रेम में कोई नियम बंधन नहीं होते। यदि प्रेम सच्चा है तो फिर कोई विधि विधान नहीं रहते। यदि प्रेम पवित्र है तो फिर शुद्ध-अशुद्ध के बंधन नहीं रहते। यदि प्रेम पावन है तो कैसी अपवित्रता भाई। प्रेम में इतनी शक्ति है कि सारी संसारिक बाधाएँ धूल हो जाती हैं। प्रेम में विभोर जीव यह नहीं देखता कि वो नहाया है कि नहीं, उसने यह वस्त्र पहिने हैं या नहीं, वह फलाँ आसन में बैठा है कि नहीं, सारे नियम प्रेमी के लिए फना हो जाते हैं। प्रेमी हर हाल में, हर स्थिति में अपने प्रीतम में खोया

रहता है। अपने प्यारे की याद में गुम उसकी आगोश में सुन पड़ा रहता है। उसे अपने तन बदन की होश ही नहीं रहती। उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते उसकी निगाह अपने प्रीतम पर टिकी रहती है। उसका प्रीतम भी प्रेम के पवित्र बंधन में बँधा हर दम उसके अंग-संग रहता है। प्रेम का बंधन इक ऐसा पक्का बंधन है कि जिसमें एक बार बंध गए तो छुटकारे की जगह ही नहीं रहती। प्रेम का यह पवित्र बंधन यदि गुरु दया से अपने प्राणप्यारे गुरुदेव से ही पक्का हो जाए तो फिर क्या कहने।

सत्गुरु से प्रेम होता कैसे है? जीव में सत्गुरु से प्रेम करने का सामर्थ्य ही नहीं है। यदि सत्गुरु का अपने किसी बच्चे पर प्रेम उमड़ता है तो उस बच्चे के मन में सत्गुरु के प्रेम का फलस्वरूप सत्गुरु से प्रेम जागृत होता है। जीव आत्मा के प्रति परम आत्मा के अनंत प्रेम के फलस्वरूप ही कोई दिलवाला सत्गुरु का प्रेमी बनता है और अपने को अपने प्रीतम में मिलाने के लिए व्याकुल हो उठता है। मजे की बात है यह शुद्ध निष्काम प्रेम बड़ी ही सरलता से जीव को उसके प्रीतम सत्गुरु में सदा सर्वदा के लिए विलीन कर देता है। जीव आत्मा बड़ी सहजता से प्रेम बंधन में बंधकर अपना अस्तित्व खोकर परम-आत्मा में सदा-सदा के लिए समा जाती है। यूँ कहना सही होगा कि सत्गुरु प्रेम वश अपने बच्चे को अपने में गुम कर लेते हैं। बच्चा सत्गुरु माई में समा जाता है और उसका जन्म जन्मांतर से चला आ रहा आवागमन खत्म हो जाता है। कितनी अथाह शक्ति इन ढाई अक्षरों में भरी है। तो ईश्वर से, सत्गुरु से, बाबा साईंनाथ से सच्चा-सुच्चा निष्काम प्रेम करके तो देखो। जरा साईं से नज़रें मिलाकर तो देखो, साईं प्रेम में न्योछावर होकर तो देखो प्रेम की, प्यार की, इश्क की अथाह शक्ति का ज्ञान हो जाएगा। याद रहे प्रेमी अपने प्रीतम से कुछ लेना नहीं जानता बस देना-देना ही जानता है। उसे केवल एक मात्र अपना प्रीतम चाहिए होता है बाकी और किसी भी चीज़ की चाहत उसके ज़हन में नहीं रहती। किसी ने क्या खूब कहा है :

इश्क-ए-हकीकी में मिट जाना होता है ।
वाहिदत्त का जाम पीकर मसताना होता है ।।
ये इश्क बला ऐसी सीधी रूह पे लगती है ।
आपन को भुलवा देती वजूद भी गंवाती है ।।
इश्क नहीं आसाँ बस इतना समझना है ।
दिलबर का फक्त ऐहसास बाकी रह जाना है ।।
और नहीं कुछ भी फिर दिल को भाता है ।
तन मन फिर उस इक के रंग में रंग जाता है ।।

इश्क वैसे तो करमांवालों को ही होता है अपने यार से लेकिन इश्क आसान बात भी नहीं। इश्क आशिक को दिवाना बना देता है। इश्क आशिक के वजूद को ही तबाह कर के रख देता है। इश्क किया था मीरा ने उसे चारों ओर हर जीव में अपने कृष्ण के दर्शन होने लगे। इश्क महाप्रभु चैतन्य देव ने किया वे अपने प्रीतम के प्यार में अलमस्त होकर नृत्य करते थे और देखो अंत सशरीर अपने प्रीतम में समा गए। इश्क बाबा फरीद का बेमिसाल था। उनके इश्क की इंतहा उन्हीं के द्वारा कही गई ये दो पक्तियाँ ब्यान करती हैं।

कागा सब तन काईयो मेरा चुन चुन खाईयो मांस ।
मेरे दो नैना मत खाईयो मोहे पिया मिलन की आस ।।

इश्क भिलनी ने अपने राम से किया। अपने जूठे बेर अपने प्रीतम राम को खिलाए और मर्यादा पुरुषोत्तम प्रीतम भी अपनी सारी मर्यादाएं भूलकर उसके प्रेम में विभोर होकर जूठे बेर खाते रहे। अपने राम के प्रेम में जब कोई खो जाता है, उसे पाने के लिए तरसता है, तड़फता है तो दुनिया की समझ में यह बात नहीं आती। दुनिया वाले उसे पागल, दिवाना न जाने क्या-क्या नाम दे डालते हैं। प्राणप्यारे पापा द्वारा रचित एक भजन में यह बात बयान होती है। प्राणप्यारे कहते हैं :

मेरो रोम-रोम श्री राम पुकारे, राम मिला दो कोई ।
रो-रो अखियाँ हुईं व्याकुल कौन करे दिलजोई ।।
कोई कहे ये हुआ दिवाना कोई कहे निरमोही ।
अपने कहें ये है बेगाना भेद न जाने कोई ।।

ईश्वर प्रेम, सत्गुरु प्रेम के ऐसे अनेकों उदाहरण हमें इतिहास में पढ़ने सुनने को मिलते हैं। अपने प्रीतम रूपी ईश्वर से सच्चा सुच्चा निष्काम प्रेम करने वाली आत्माएँ जगत में आकर संसार को प्रेम का सबक सिखाकर अपने प्रीतम में समा जाती हैं। अरे ज़रा एक बार इस निर्मल प्यार को अपना के देख। अपने प्रीतम बाबा साईं नाथ से निष्काम प्रेम करके तो देख। देख उसका सच्चा प्यार तुझे कहाँ से कहाँ ले जाएगा। ये क्यों, क्या, कैसे की भाषा छोड़कर प्रेम की भाषा अपना के तो देख साईं तुझे अपना लेंगे। साईं से साईं को माँग के तो देख दोनों बाहें फैलाए साईं तुझे आलिंगन करने के लिए बेताब हैं। साईं प्रेम में विभोर होकर तुझे अपने में गुम कर लेंगे। अरे साईं माँ को प्यार से बुला के तो देख, माँ ... माँ ... माँ पुकार के तो देख साईं माँ तुझे अपने आँचल की ठंडी छाँव में छिपा लेगी। जब प्रेम प्रबल हो जाता है तो आगे साईं, पीछे साईं, ऊपर साईं, नीचे साईं, सभी दिशाओं में साईं-साईं ही नज़र आते हैं। साईं के सिवा कुछ और दिखता ही नहीं। प्रेम में, साईं में अपना वजूद खाक हो जाता है। अरे अपने प्यारे सत्गुरु, अपने प्यारे साईं से प्रीत लगा, प्यार के अथाह अनंत सागर साईं से प्यार कर, प्यार केवल प्यार की खातिर कर और उस प्यार के सागर में डूब जा साईं दोनों हाथ फैलाए तुझे अपनाने के लिए तैयार खड़े हैं। ऐसे सच्चे प्रेमी की बाट जोह रहे हैं साईं। साईं की सच्ची प्रीत साईं दया से किसी कर्मावाले को, किसी भाग्यशाली को ही मिलती है। बाबा का प्रेमी प्रेम से कहता है :

तू ही तू बस तू है मेरा और न जाना कोई ।
इक पल तुध नूं बिसराँ बाबा ते मर जाना होई ।।

प्राणप्यारे पापा श्री आनंद साईं जी द्वारा बताए गए प्रेम मार्ग पर हम आज खूब घूमे। इस प्रेम प्याले को पीकर हम मस्त हो गए। सत्‌गुरु के प्यार का नशा ही कुछ ऐसा है कि एक बार चढ़ गया तो फिर उतरने का नाम ही नहीं लेता। इस पर्‌म पावन प्रीत का रस चख के देखो छूटने का नाम ही नहीं लेगा। जी करेगा कि पीते ही रहो और खोए रहो अपने प्राणप्यारे प्रीतम में। सत्‌गुरु दीनदयाल के इस कृपा प्रसाद पर गहन विचार करने की जरूरत है, इसे अपनाने की जरूरत है। सत्‌गुरु देव आदि देव का यह प्रशाद यदि उनकी दया से हमारे अंदर उतर जाए तो हमारी पूजा श्री गुरु चरणों में अवश्य ही स्वीकार होगी। सत्‌गुरु के श्री चरणों में निस्वार्थ, निष्काम प्रेम जैसी कोई साधना है ही नहीं। भगवान को पाने के लिए इस जैसा सरल और सुंदर मार्ग ही नहीं है। सबसे सरल मार्ग ईश्वर तक पहुँचने के लिए है "प्रेम मार्ग" करके देखो और अनुभव करो बाबा के निर्मल पवित्र प्यार को।

श्री गुरु पूर्णिमा की आप सभी को लख-लख बधाईयाँ देते हुए आपसे इजाज़त चाहते है। सत्‌गुरु के रहम-ओ-करम से फिर मुलाकात होगी।

दीद के दिवानों को कहाँ चैन पड़ता है ।
दीदार देने वाला भी दिवानगी परखता है ।।

इसी माध्यम से फिर मिलेंगे, फिर उसके प्यार की प्यारी प्यारी बातें करेंगे। तब तक के लिए अल्लाह मालिक।

इश्क ऐसा जालिम है दोनों ओर जलाए ।
आशिक इश्क में अपने को ख़ाक में मिलाए ।।

"जै जै दाता आनंद साईं"

श्री गुरु चरण-कमलों में सादर समर्पित।

आनंद का पथ

(श्री आनंद साईं जी के अमृत वचन)

''आनंद का पथ'' इस शीर्षक के अंतर्गत या फिर अन्य शीर्षकों के अंतर्गत प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी द्वारा दिए गए प्रवचनों को लिपिबद्ध कर सर्व जगत् के कल्याण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। लगभग हर बार ही ऐसा होता था कि प्राणप्यारे गुरुदेव प्रवचन शुरु ही करते थे और फिर सोयम् ईश्वर के रूप से सीधी वाणी आना शुरु हो जाती थी। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार हमने आँखों से देखा और कानों से सुना है इसीलिए इस पत्रिका में दिए जा रहे लिपिबद्ध प्रवचन में कई बार माँ भगवती या बाबा साईंनाथ सोयम् हमें अपना रास्ता बताते हैं। पाठकों की जानकारी व प्रकाशित प्रवचन ठीक से समझने हेतु ये जानकारी दी जा रही है।

— संपादक

सत्गुरु के दिवाने

ईश्वर के भाणे में सदा रहना ये ही अध्यातम् है। ईश्वर की इच्छा क कभी भी भंग नहीं करना, किसी भी स्थिति में, किसी भी हाल में। ये ह भगवान को पाने का वाहिद रास्ता है। हुक्म में रहे नहीं और लाख साधन किये, बात बनेगी नहीं। हम हर बार मानव चोले में आये, अपनी मर्जी किया मार खाकर चले गये। अब इस बार सच्चे गुरु बाबा की प्राप्ति हुई है। उन्हों हमें पार होने का संकल्प भी लिया है परन्तु रास्ता एक ही बताया सदा सर्वद हुक्म में रहते जाओ। हुक्म में रहोगे तो तर जाओगे। हुक्म तोड़ा तो बात बिगड़ जाती है। हुक्म में रहना कैसे? एकता को अनुभव करते हुए बाब की एकता, बाबा की पूर्णता को अनुभव करना। बाबा एक हैं, बाबा ह पूरण हैं, बाबा ही सब कुछ हैं। जगत् में जो कुछ होता है बाबा की इच्छ से होता है इस सच्चाई को दृढ़ करना है। एक की मर्जी में सब कुछ ह

रहा है, एक ही कोटि ब्रह्माण्डों को चलाने वाला है। एक की इच्छा में सूरज, चाँद, सितारे चल रहे हैं। जो इस सच्चाई को पूरे मन से याद करता है उस एक की इच्छा में रहता है, उस एक की मर्जी में अपनी मर्जी मिला देता है, वो जन्म-मरण की बाजी जीत जाता है। इस सच्चाई को दृढ़ करना है। उस एक की इच्छा में चलते जाना इसे ही शरणागति कहते है। उस एक की इच्छा में लगातार चलते रहना इसे ही शरणागति कहते हैं। ये ही भक्ति है। इससे होता क्या है? पहले इसी चोले में ईश्वर की पूरी रक्षा मिलती है फिर अन्त समय में उस अनंत सत्ता में मिलन हो जाता है। वो हमारे हो जाते हैं, हम उनके हो जाते हैं। इस सच्चाई को सदा समझते जाना है। इच्छा में रहते जाओ और निश्चित होते जाओ। तुम यदि मेरी इच्छा में रहते जा रहे हो तो तुम मेरी जिम्मेदारी बन जाते हो। मेरी जिम्मेदारी हो जाती है तुम्हारी रक्षा करना। हर प्रकार से तुम्हारी रक्षा करना। यदि इच्छा में नहीं रहते हो तो रक्षा भी बराबर नहीं होती उसको सौ चिंताएँ लगी रहती हैं। रक्षा पाने का रास्ता क्या है? मेरे अर्पित होकर रहो, मेरी इच्छा में रहो। मेरी इच्छा में रहोगे तो रक्षा अपने आप आती रहेगी। रक्षा अपने आप होती रहेगी। जो सच्चे मन से मेरे कार्य में लगा हुआ है। जिसको अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए। जो सच्चे मन से मेरी सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है उसकी रक्षा नहीं होगी तो किसकी होगी। इस सच्चाई को दृढ़ करना है।

प्यार सच्चा होना चाहिए। **हे मेरे प्यारे सच्चे प्यार, प्यार ही तेरा रूप है।** हम ईश्वर को हाड़मांस में देखते हैं क्योंकि हमारा मन आदि हो चुका है भगवान को किसी भी विशिष्ट रूप में देखने का। जहाँ प्यार में मिलावट है मतलब परस्ती है वहाँ प्यार नहीं वहाँ ढोंग है। सकाम उपासना कोई उपासना नहीं है। हम मतलब पूरा करने के लिए भगवान के पास जाते हैं भगवान हमारा मतलब पूरा कर देते हैं। हम कहते हैं हमारी यह भक्ति है। हम भगवान के पास मतलब के लिए जाते हैं भगवान भी तमाशा देखते हैं। Lord Jesus और बाबा में भेद क्या है। तुम सच्चा प्यार करो बाबा से Lord Jesus तुम्हारे पास रहेंगे। सौदेबाजी की क्या जरूरत है। जब तक तुम्हारा मतलब हल होता है तब तक उनके होकर रहते हैं। हम बाबा

के बच्चे हैं परन्तु Lord Jesus भी हमारे पिता के समान हैं, सौदेबाज़ी की क्या जरूरत है। भगवान भी test लेते हैं। किसका प्यार कितना सच्चा है। इन सच्चाईयों को अच्छी तरह से समझने का है। बीमारी में भी तेरा प्यार छुपा है। अपने को दृढ़ करना है। दुःख तकलीफ आये उस दुःख तकलीफ में भी सच्चा प्यार छुपा है। जहाँ से ज्यादा फायदा दिखा उस रूप को पकड़ लेना ये भक्ति तो नहीं है। महाराज बोलते हैं मैं test लेता हूँ। बाबा कहते हैं मैं थोड़ा चलाता हूँ फिर test लेता हूँ, थोड़ा चलाता हूँ फिर test लेता हूँ ये पक्का है कि कच्चा धागा है। जो कुछ सिखाया वो जीवन में लाया कि नहीं। दुनियाँ परस्त आदमी दुनियाँ में रहे या अध्यातम में रहे वो धोखे बाज है, उसका प्यार सच्चा नहीं है। जहाँ उसको ज्यादा मिला उसको पकड़ लेगा ये कोई ज्ञान नहीं है, भक्ति नहीं है, प्यार नहीं है। निष्काम भक्ति जैसी कोई भक्ति नहीं है यदि हमारा प्रेम बाबा के लिए सच्चा है – हे बाबा हमें तुम्हारे बिना कुछ नहीं चाहिए। तुम्हारी इच्छा से एक-एक पल बिना माँगे, बिना चाहे बीते ऐसी प्रार्थना करेंगे तो हमारी रक्षा होती ही है। दुनियाँ से, चारों ओर से अनुभव आते जा रहे हैं। लाखों अनुभव आते जा रहे हैं। मतलबी जीवों को भी बाबा से सब कुछ मिल रहा है यदि हम सच्चे मन से उनके हो चुके हैं उनके बिना कुछ नहीं चाहते तो हमारी रक्षा होएगी कि नहीं होयगी। होएगी ही।

सच्चे मन से अपना जीवन उनके अर्पित करके रखना· सच्चे मन से उनकी सेवा करते जाना। उन्होंने ये दरबार सेवा के लिए लगाया है। जीवों का जीवन उठाने के लिए लगाया है। सच्चे मन से अपनापन निकाल कर उनकी सेवा करते ज़ाना ये ही सच्ची भक्ति है ये ही सच्चा प्यार है। हम करने के इतने आदि हो गए हैं हम सोचते हैं हम जितनी साधना करते हैं उतनी दया हमारे ऊपर आती है। कर्तापन में हम सच्चे प्यार को पीछे धकेल देते हैं। हम आम तौर पर कहते हैं लेकिन कुछ ना कुछ हमारे मन में रहता है, कुछ ना कुछ फायदा हो ये भी रहता है। ये हमारी बड़ी भारी भूल है। हम सोचते हैं, हम सभी सोचते हैं, बचपन से trained किया गया है, In simple words quantity and quality. अध्यातम

में quality देखी जाती है। ये भक्ति कर रहा है किस मतलब से कर रहा है? ये श्री भगवान के प्रेम में तड़पता है? ये भगवान के रंग में रंगा हुआ है? हमारा पूरा सोचने का process सच्चे प्यार में हैं। ईश्वर तो सच्चे प्यार में मिलेंगे। प्यार में मिलावट मत करो। प्यार सच्चा नहीं है हम केवल quantity देख रहे हैं नम्बर देख रहे हैं quality नहीं है तो हम भूल कर रहे हैं। तू सच्चे मन से बोल तेरे बिना कुछ भी नहीं चाहिए। **हे मेरे प्यारे प्यार प्यारा तेरा रूप** कितनी भी माला घुमा लिया, इतनी माला घुमाई इतना फल हमें मिल जाएगा। बात बनेगी नहीं।

हम जड़ को खुश करने में लगे हुए हैं, चेतना के साथ घृणा करते हैं, जहाँ वो साक्षात है उसके बिना सब मिट्टी है उस चेतना से प्यार करना है। चेतना में वो आप हैं। इस सच्चाई को समझने का है। चेतना से प्यार नहीं किया उनकी मूर्ति उनकी प्रतिमा से प्यार किया। जहाँ उनको तकलीफ हो रही है, भूखे रह रहें हैं कष्ट हो रहा है वहाँ उनको नहीं देखा। बात बनती नहीं है। प्यार यदि सच्चा हैं तो जहाँ किसी भी रूप को तकलीफ हो रही है तेरे को तकलीफ हो रही है वहाँ हमारा मन नहीं पसीजता तो हमारा प्यार सच्चा कहाँ है? इस सच्चाई को समझना है।

पहिचान के बिना भक्ति नहीं होती हमने गुरु ॐ की धुनि शुरु किया, गुरु ॐ की धुनि तभी फायदा करेगी जब गुरु की पहिचान होगी। पहिचान नहीं तो कुछ नहीं मिलेगा। गुरु का सबसे पहिला और आखरी गुण क्या है? उनको अपने लिए कुछ नहीं चाहिए, दूसरों का छोटे से छोटा कर्म अपने ऊपर लेकर पूरा करते हैं। ये पहिचान हो गई तो मैं भरपूर दूँगा और यह पहिचान नहीं हुई तो हम अपने गुरु को साधारण रूप से देखते हैं। गुरु ॐ बोलने से भी क्या मिलेगा तू पहिचान कर Blind faith से नहीं ठोक बजा कर देख इसको, भगवान के सिवाय कुछ चाहिए क्या। यदि तेरा मन कहे एक तेरे सिवाय कुछ नहीं चाहिए तो गुरु ॐ से सब कुछ मिलेगा यदि गुरु के सिवाय कुछ और चाहिए तो यहाँ से चले जाओ। पूर्ण माँ को बच्चा चाहिए। पूर्ण तो पूर्ण है। पहिचान कर और फिर गुरु शरण में आ। निश्चय तो है नहीं, विश्वास तो है नहीं। एक जीव है जो वाणी सुन कर

कितना कुछ ले लेता है, एक जीव वो है जो वाणी सुनता है परन्तु विश्वास नहीं है कुछ नहीं मिलेगा।

गुरु दृढ़ता से मिलते हैं। वो (श्री आनंद साईं) कहते हैं मेरे को तो दस्तख़त भी करना नहीं आता, दो लफ्ज़ भी लिखने नहीं आते फिर ये इतनी रचनाएँ कहाँ से आईं। इसी एक चीज़ को समझो। ये खेल किसका है? साईं गीता की शक्ति अथाह है, अथाह से अथाह है। कितने अनुभव चारों तरफ से आ रहे हैं और वो कहते हैं मेरे को तो दो लफ्ज़ भी लिखने नहीं आते। दस्तख़त नहीं करना आता, इतना बड़ा खेल जगत् में हो रहा है किसका खेल है। इन सच्चाईयों को समझने का है। गुरु की पहिचान करो फिर एक बार भी गुरु ॐ बोलोगे तो तुम्हारा जीवन उठा लूँगा। गुरु ॐ की पहिचान करो। दुनियाँ भर में कहीं भी चले जाओ जहाँ गुरु बैठे हैं चढ़ावा दिए बिना दर्शन होते हैं क्या? यह दृश्य सिर्फ यहीं पर मिल रहा है फिर हम उतनी दृढ़ता से चल रहे हैं क्या? जितने बड़े गुरु उतने ही बड़े चढ़ावे उतना ही मौज मज़े का जीवन। कर्म फल दाता तो हमारी माँ हैं। बाबा बोल रहे हैं गुरु के जो standard मैंने यहाँ पर रखे हैं वो और कहीं नहीं हैं। खाली हाथ गुरु के पास दर्शन करने जाना ये शास्त्र की मर्याद में पाप है। यहाँ मैंने किससे क्या लिया? ये मर्याद भी नहीं रखी। न नमस्कार न मान-सम्मान न दान दक्षिणा, न चढ़ावे कुछ भी तो नहीं लिया। मैंने यहाँ से दिया ही दिया है। फिर किसी से क्या मतलब रखना। तो पहिचान करो फिर बोलो गुरु ॐ। जो मैंने यहाँ दिया है वो बाहर कहीं भी नहीं दिया है। तो फिर क्यों नहीं अपने गुरु के चरणों पर बलिहार होते। अगर यह सच्चाई है कि यह चीज़ दुनियाँ में कहीं नहीं मिलेगी। ये मेरा दरबार है मैं ही गुरु हूँ, मैं ही इस रूप के अंदर से जगत् को चला रहा हूँ। मैं ही प्रचार कर रहा हूँ। अगर सच्चाई नहीं दिखती तो क्यों यहाँ आते हो। अपने गुरु के चरणों पर वारी क्यों नहीं जाते। एक चीज दुनियाँ में कहीं नहीं मिलती वो है पैसों की बात। घर-बार, पैसा, धन-दौलत, सब कुछ छोड़ देता है सबसे बड़ी बात है नाम।

ये नाम सबसे आखरी की कमजोरी है। दुनियाँ में मेरा नाम हो, यहाँ किसका नाम हो रहा है। सारी दुनियाँ में घूम लो गाँव-गाँव शहर-शहर में देख लो ये सोचना लाज़मी है। मतलब शुरु नाम से ही होता है, पैसे से भी खतरनाक है नाम। भीड़भाड़ से दूर बाबा बोल रहे हैं मैं आपको X-Ray करके दिखा रहा हूँ। यदि इसके साथ की एक भी चीज़ तुमको दुनियाँ में मिल जाये तो तुम कहो बाबा साईंनाथ झूठ बोल रहे हैं। बोलो खुल्लम खुल्ला बोलो और यदि ये समझोगे नहीं, पहचान नहीं करोगे दृढ़ता से, तब तक मिट्टी भी हाथ में नहीं आएगी। पहचान हो गई तो फिर मैं तुम्हें हवा में उड़ाऊँगा। मैं जब गुरु की बात बता रहा हूँ तो मैं अपनी बात बता रहा हूँ। इस बच्चे को मैंने वचन दिया तू खाली नाम मात्र को बैठ जा, खेल सारा मैं करूँगा। यह सब मैं इतिहास में लिखूँगा। दुनियाँ रोयेगी, ज़ार-ज़ार रोयेगी, यह आगे आने को किसी भी कीमत में तैयार नहीं था। माँ बढ़पन से बचाओ, माँ बढ़पन से बचाओ, मेरी रक्षा करो, मेरे को अपने चरणों में रखो, फिर हमने आखिर में वचन दिया तुमको भरोसा है हम पर तो तुम नाममात्र के लिए बैठ जाओ काम पूरा का पूरा हम करेंगे। एक मनुष्य लाखों जीवों को जागृत कर सकता है क्या? एक बच्चा कर सकता है? गुरु ॐ की धुनि तभी फल देगी जब सब चीज़ों की छानबीन कर लें। अरे तूने तो कुछ नहीं किया, अरे तूने तो कुछ नहीं किया बाबा साईंनाथ ने सब कुछ किया। जैसे चींटी के चलने की आवाज नहीं आती ऐसे चलते जा रहा है यह बच्चा। ऐसे गुरु पर बलिहारी जाओ। बलिहारी जाओ, बलिहारी जाओ, कुर्बान जाओ। कहीं नहीं मिलेंगे ऐसे गुरु। और जगह होती तो मेले लग जाते और यहाँ चींटी के समान रहते हैं। मैं ही गुरु हूँ ये बच्चा नहीं। तुममें से जो ये समझ लेगा पैसा नहीं, मान-मर्यादा नहीं, माला नहीं। कोई भी मनुष्य इन चीजों से ऊपर उठ नहीं सकता फिर अच्छी छान-बीन करो। नाम और माया ये ही संसार की सबसे बड़ी कमजोरी है। नाम और माया। बाबा रो रहे हैं मैं यह पहचान किसी मतलब से दे रहा हूँ, मैं यह अपनी पहचान दे रहा हूँ। इसके अंदर मेरे सिवाय कोई नहीं है। जो करनी हो रही है वो ईश्वर की करनी है – पैसे से नाम से नहीं।

नाम! मैं यहाँ आकर फेल हो जाता हूँ। परखो, परख कर पहिचान करो, दीवाने हो जाओ, पगले हो जाओ मैं ही गुरु हूँ मैं ही X-Ray कर रहा हूँ अपने पर। दया तो मैंने गुरु के द्वारा बाँटनी है लेकिन गुरु की पहिचान ही नहीं है। पूर्ण विश्वास, श्रद्धा नहीं है। करनी में ही विश्वास नहीं है तो मिलेगा क्या? मैं तुम्हारे सबके कल्याण के लिए बोल रहा हूँ। यह करनी तुमको दुनियाँ में कहीं नहीं मिलेगी। जहाँ से मैंने साईं गीता लिखानी थी पहले साईं गीता का standard रखना था फिर साईं गीता लिखनी थी। गुरु के परवानों, दीवानों इकट्ठे हो जाओ। गुरु में ही मुझे देखो तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा।

"जै मैय्या"

ॐ साईं मुरली मनोहराय नमः।।

जै जै वासुदेव नारायन जै जै कृष्ण कन्हाई ।
जै हरि विठ्ठल जै हरि विठ्ठल जै जे रुक्माबाई ।।
जै माधव जै कृष्ण मुरारी जै जै जै यदुराई ।
जै मोहन जै मुरली मनोहर बार बार शरणाई ।।

ॐ साईं गोविन्दाय नमः।

मच्छ कच्छ जै नील नारायन जै वामन अवतारा ।
गोपीनाथ निरंजन माधव जग का भार उतारा ।।
जै जै जै श्री रामचन्द्र जै सीतानाथ अपारा ।
जै वाराह जै शक्ति अथाह जै जै बारम्बारा ।।

"ॐ श्री साईं"

साईं शंकर

नमस्तंग रामेश्वर नमस्तंग महेश्वर ।
नमस्तंग सुरेश्वर सुमेश्वर ।।

नमस्तंग अखलेश्वर नमस्तंग परमेश्वर ।
नमस्तंग योगीश्वर नमस्तंग जगदीश्वर ।।

नमस्तंग गौरीश्वर नमस्तंग देवीश्वर ।
नमस्तंग शिवाय नमस्तंग हरआय ।।

नमस्तंग साकारे नमस्तंग निराकारे ।
नमस्तंग ज्ञाने नमस्तंग भगवाने ।।

नमस्तंग अखण्डे नमस्तंग प्रचण्डे ।
नमस्तंग दयाले नमस्तंग कृपाले ।।

नमस्तंग अनूपे ज्योति स्वरूपे ।
नमस्तंग स्वामी नमामी नमामी ।।

''ॐ श्री साईं''

नाम की शक्ति

जीव सच्चे मन से भगवान की शरण में कब आता है जब सब कुछ करके देख लेता है। बात तो बनी नहीं, बिगड़ी तो बनी नहीं है। बिगड़ी बनाने वाला एक ही है। अब वो अहम् छोड़ कर सच्चे मन से माँ की शरण में आता है। सच्ची पूजा क्या है? सच्ची पूजा बाहर की चीज़ें चढ़ाना नहीं है। सच्ची पूजा अपने आप को, अपने झूठे अहम् को, अपनी झूठी मैं को चढ़ाना है। उस स्थिति में जाना है। जहाँ ये झूठी मैं नहीं है, जहाँ एकता का प्रकाश है, जहाँ पूर्णता का प्रकाश है। जहाँ तू रहे मैं ना रहूँ, वह सच्ची पूजा है। इस रचना के पीछे जाना है। जहाँ एक है, दूसरा है ही नहीं। पूजा, सिमरन, कीर्तन बहिरांग की जितनी भी आराधना हैं वो सब मदद करती हैं अंतरंग में जाने के लिए। हमारे मन को निर्मल बनाती हैं। चित्त शुद्ध करती हैं। जब चित्त शुद्ध हो जाता है बहिरांग की साधना करते-करते तब अंदर जाते हैं। जब तक चित्त शुद्धि नहीं होती है तब तक बात बनती नहीं है। माँ का नाम लेने से, माँ का गुणवाद गाने से जन्म जन्मांतर के पाप धुलते हैं। जब तक उनकी याद बनी रहती है तब तक उनकी दया भी आती रहती है। इन साधनों से हमें उनकी याद बनी रहती है। समझना है, साधना करते जाना है।

महालक्ष्मी जै महासरस्वती, महाकालिका दुर्गा माँ भगवती।।

हम जुग-जुग पहले जहाँ से उपजे थे फिर से वहीं वापिस जाना है। वहाँ पर वापिस पहुँचने के लिए ही सब साधनाएँ की जाती हैं। किसी भी स्थिति से आओ कुछ भी हो हमें बार-बार वापिस उस स्थिति में source में जाना है। जहाँ से यह विचार आ रहा है। कोई कर्म हम करते हैं यह कर्म करने की प्रेरणा कहाँ से आ रही है। हम वापिस उस चेतना में चले जाते हैं। यह जगत् किसका खेल है? यह जगत क्या है? सोचते रहना है, विचार करते रहना है। यह कहाँ से उपजा है? इस बाहरी शरीर के पीछे जाना है। इस बाहरी जगत के पीछे जाना है। जब तक हम इस बाहरी जगत को अलग मान रहे हैं तब तक हम धोखे में हैं। जब हम

बाहरी सत्ता से दूर जाते हैं तब उस अंतरंग सत्ता में जाते हैं, वहाँ तक पहुँच पाते हैं *"ॐ तत् सत्"* श्रीमद् भागवत गीता में श्री भगवान अर्जुन को कहते हैं ॐ तत् सत् ये ही गम्भीर स्थिति है। अंदर का आत्म तत्व है। चेतन तत्व है, चेतना है, केवल वो ही सत् है। यह जो बाहरी पाँच तत्व का शरीर है यह मिथ्या है, जड़ है। ॐ तत् सत् वो जो तत्व है वो ही सत् है, वो ही पूर्ण है। उस तत्व तक पहुँचने के लिए ही सब साधना की जाती हैं। ॐ तत् सत् उस ॐ तत् सत् का सिमरन करते-करते तत् सत् तत्व में पहुँचना है। बाहरी तत्व को छोड़कर उस सत् तत्व में विलीन होना है। ॐ तत् सत् साधना खाली ये ही नहीं कि खाली पूजा-पाठ, ध्यान-धारणा, नाम सिमरन करना ये ही नहीं, अपने किए हुए कर्म भोगना यह भी बहुत जरूरी साधना है। साधना करने से हमारे कर्म में जरूर फर्क पड़ जाता है। कर्म का वो जोर नहीं रहता है, intensity नहीं रहती है और ये हो की हमारा कर्म मिट जाए तो ये नहीं हो सकता। कर्म तो भोगना पड़ेगा साधना करने से कर्म की गति ढीली पड़ जाती है। लेकिन खत्म नहीं होएगी। जो कर्म मैं दूँ उसमें रहो किसी भी स्थिति में। हम बताते हैं शरणागति क्या है? किसी भी स्थिति में हम रखें, जहाँ पर भी हम रखें वहाँ खाली हो जाना चाहिए। वहाँ खल्लास हो जाने की जरूरत है फिर सोचना भी नहीं की इधर से उधर होना है। सोचना भी नहीं, नहीं कर सकते, नहीं जा सकते, नहीं हिल सकते तुम नहीं हिल सकते। ये ही साधना है **जिस हाल में हम तुम्हें रखते हैं उसी हाल में रहना है जहाँ रखें जैसे रखें जिस स्थिति में रखें**। अहम् से कोई बात नहीं बनती। अहम् जब तक बिलकुल टूट नहीं जाता। **साधना में से जब तक कर्तापन नहीं निकालोगे तब तक वो सच्ची साधना नहीं है।** भजन भी मेरी दया से होता है, कहीं पर भी कर्तापन नहीं आना चाहिए। यह मन बड़ा चतुर है। तू हुक्म में क्यों नहीं रहता। सच्चा शिर्डी तो तब है जब हम शुद्ध मन से हुक्म में रहते हैं।

जो कर्म आता है उनकी इच्छा से आता है दवाई ठीक करती है ऐसा नहीं है। **बेटा दवाई में जो रोग ठीक करने की शक्ति है वो मैं हूँ।** इस बात को समझो। डॉक्टर क्या करेगा तुम क्या करोगे। मेरी इच्छा होएगी तो दवाई में शक्ति

आ जायेगी ठीक करने की। **दवाईयों में बीमारियों को दूर करने की जो शक्ति है वो मैं हूँ। मेरी इच्छा होती है तो दवाई लगती है।** अब बड़े सुन्दर वचन बोल रहे हैं **मैंने कर्म पूरे कराने हैं तुम पचास हजार स्पेशालिस्ट के पास भागते रहो लेकिन जब तक मैंने कर्म पूरे कराने हैं तो कोई भी डॉक्टर, वैद्य, स्पेशालिस्ट कुछ नहीं कर सकते हैं।** जीवन की इन सच्चाईयों को जानना अत्यंत जरूरी है। इन सच्चाईयों के बगैर मनुष्य-बुद्धि हमें धोखा देती जाती है। बहुत लोग धन-दौलत का ज़खीरा करते हैं उसका आसरा क्यों नहीं लेते, ना डॉक्टर की जरूरत पड़ेगी न दवाईयों की। **ये नहीं कहते कि दवाई मत लो, न लो, दवाई लो पर ठीक तो उनकी इच्छा से होते हैं।** डॉक्टर वैद्य तो ठीक नहीं कर सकते। अब महाराज बोल रहे हैं This is reality इन सच्चाईयाँ को समझने का है। This is real wisdom जब तक मेरी इच्छा नहीं होएगी डॉक्टर क्या डॉक्टर फॉक्टर का बाप भी ले आओगे तुम्हें ठीक नहीं कर सकते। डॉक्टर यदि बीमारियाँ ठीक कर सकते तो इनको कहो कि तुम मरते क्यों हो, तुम क्यों बीमार होते हो। किसी भी डॉक्टर का बाप ठीक नहीं कर सकता, किसी डॉक्टर की कोई भी दवाई नहीं लगती। **अरे बजाय डॉक्टर के पीछे घूमने के माला लेकर बैठ जाओ राम-राम-राम सबसे बड़ी anti-biotic है। यह anti-biotic है। हर दवाईयों की ये दवाई है राम, राम, राम, राम, राम।**

जो रूखा-सूखा मिले वो खुशी से खाओ। सादा खाओ सादा पीओ। थोड़ी जरूरतें रखो मेरी दया तुम्हारे साथ रहेगी। जितना काला बाजार दुनियाँ में बढ़ते जा रहा है उतनी डॉक्टरों की प्रेक्टिस बढ़ती जा रही है। अच्छा आप बताओ आज से ३०-४० बरस पहले किसी को देखा था heart attack से मरते। किसी ने देखा था इतने बड़े अस्पताल। कई सालों में कोई एक मरता था। **पहले लोग दिल को माँ के हवाले करते थे तो दिल की बिमारी नहीं आती थी। आज सब लोग दिल को माया देवी के पास रखते हैं।** पहले ना तो इतनी वासना थी ना तो इतने ऐश इश्रत के सामान थे। १०-५० हजार आ गया तो कहते थे कि मेरे बच्चे कमायेंगे मैं खाऊँगा और आज करोड़ भी किसी को दे

दो तो कहता है मैं भूखा नंगा हूँ। पहले वासनाएँ नहीं थी जो मिल गया ठीक है पूजा-पाठ करते थे, लोग प्रारब्ध में रहते थे। आज लोग कहते हैं ये खुद कुछ करना नहीं चाहता है। प्रारब्ध में रहना यह जहानत है, कमजोरी है खूब पैसा कमाओ, मौज मजे में रहो। क्या वो जीवन था क्या यह जीवन है। कोई मुकाबला नहीं कितनी पवित्रता थी। महाराज दिखाते हैं कितना सादा जीवन था इसी को समझने का है। उस सादगी में भगवान है। वो जो तुम खाते थे उसमें भगवान है। यह जो बाहरी दिखावा है उसमें सुख नहीं है। उसमें सुख चैन था। कह रहे हैं दिल की बीमारी से बचना चाहते हो तो दिल को ठीक जगह रखो। अरे दिल को यहाँ रखो ना। तो दिल की बीमारी नहीं आयेगी राम, राम, राम, राम, राम, राम। यह काम होता रहे राम राम होता रहे दिल की बीमारी क्या कहती है राम-राम असली Heart Tonic है। वहाँ ध्यान नहीं जाता। माला दिखा रहे हैं राम, राम, राम, राम एक नास्तिक से पूछो कहता है जितनी भी तुम माला घुमा लो क्या होता है। सब कर्म थोड़े-थोड़े में जाता है। घुमाओ माला क्यों नहीं घुमाते। कह रहे हैं पुरानी सभ्यता ही ठीक थी। इससे क्या होता है पाँच-दस साल ठहरो इनमें से कितने अंधे हो जायेंगे। लाठी पकड़ कर टटोल-टटोल कर जायेंगे, कोई इसको समझ नहीं रहा है। पाँच-दस साल के बाद समझ आयेगी जब लाठी लेकर टटोल-टटोल कर चलोंगे। **अमृत मेरा नाम है। अमृत मेरा भजन है। अमृत मेरा गुणवाद है जहाँ अमृत है वहाँ मंगल ही मंगल है। वहाँ बीमारियाँ क्या कहती हैं।** बीमारियाँ कितना जोर पकड़ेंगी। जहाँ हम हैं श्री महाराज बोलते हैं जहाँ हम हैं वहाँ क्या कम है। मानसिक रोग दुनियाँ को शारीरिक रोगों से कितना ज्यादा तंग करते हैं। जहाँ सादगी है Simple living है वहाँ यह चीज़ें तंग नहीं करती हैं।

भरोसा आ जाये, वेद पुराण पढ़ने में क्या है ये जो बाते मैंने बता दिया है यह ज़िन्दगी में सुखी होने का शांत होने का निचोड़ है। इसमें अपना जीवन ढालो तुम्हारी बात बन जायेगी। इसमें मेरी दया है। मेरी दया के बिना कुछ भी नहीं है।

" जै मैय्या "

श्री गुरु महिमा

गणेश जी की वंदना करो। स्वामी जी की जीवनी शुरु करो कथा यहाँ से शुरु होती है। नवनाथ देवों के भी आद्य गुरु हैं। गुरु मच्छिन्दर नाथ, गुरु गौरख नाथ, गुरु जलन्धर नाथ, गुरु नागेश नाथ, गुरु भरतरी नाथ, गुरु कानिप नाथ, गुरु चरपति नाथ, गुरु गहनी नाथ, गुरु रेवन नाथ। सब रचना उनको अपना गुरु करके जानती है। सभी देवता भी उनको अपना गुरु करके मानते हैं। चौथे गुरु नागेश नाथ उनकी इच्छा हुई सेवा करने की वो मेरी आज्ञा से वो तुलसीदासजी के चोले से आये फिर उनका मन नहीं भरा तो हमारे स्वामीजी के रूप में प्रगट हुये १६५ बरस तक सुन्दर भक्ति का ज्ञान दिया कथा यहाँ से शुरु होती है। इसीलिए सबसे पहले गुरु महाराज जी की जीवनी से शुरु करते है।

सत् गुरु के चरणाविंद वंदऊँ आठों याम ।
भक्त जनों के कल्पतरु सुख दायक सुखधाम ।।

गुरु गाथा ईश्वर की गाथा होती है। गुरु शक्ति ईश्वरीय शक्ति होती है। ईश्वर आप ही गुरु होते हैं। ईश्वरीय शक्ति किसी रूप के अंदर विराजमान होकर जगत् की सेवा करती है। जगत् को राह बताती है। हम हाड़माँस को गुरु मान लेते हैं। गुरु उस ईश्वरीय शक्ति का नाम है। उस ईश्वरीय शक्ति के सामने सिर झुकाना है। अपने आप को उस ईश्वरीय शक्ति के अर्पित कर देना है। गुरु नागेश नाथ के मन में इच्छा हुई जगत् की सेवा करने की नौ नाथों की इच्छा से और अपने परम गुरु श्री भगवान दातात्रे जी के हुक्म से उन्होंने यह चोला धरा। भगवान श्री दातात्रे

नौ नाथों के गुरु हैं, ईश्वर हैं, जगत् में आकर भक्ति, ज्ञान, ध्यान योग का इतना सुन्दर निर्मल ज्ञान जगत् में रखा जिसकी मिसाल देखने को नहीं मिलती है। इतनी पवित्र आत्मा जिनका योग देखते ही बनता था। संतों की करनी ईश्वर की करनी होती है। जो चरित्र उनके जीवन के द्वारा हुआ वो ईश्वरीय चरित्र था। अभी तक देश के कोने-कोने में उनके दिखाये हुये रास्ते पर चल कर जीव अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते जा रहे हैं। समझना है।

निर्मल इस चरित्र से सबका हो कल्याण ।

अब सच्चाई को सामने लाना है। नाम इस शरीर का है देखने को। चरित्र इस शरीर ने लिखा। लिखाने वाली वो आदि शक्ति आप हैं। यह तो उनके हुक्म से चरित्र लिखा गया उन्होंने हुक्म दिया की हम अपना कार्य शुरु करने वाले हैं उससे पहले तुम्हारे गुरु का चरित्र लिखना है। उनमें भी मैं ही था, सच पूछो तो चरित्र लिखाने वाले भी आप ही थे। चार-पाँच दिनों के अंदर अपना जीवन चरित्र पूरा करा दिया तो सारा का सारा खेल उस एक आदि-अनादि शक्ति बाबा साईंनाथ कर रहे हैं। चोले बदलते जाते हैं गुरु एक वो ही आप हैं। उन्होंने ही अपना चरित्र लिखा। कितनी अजीब बात है उनके शरीर छोड़ने से एक साल पहले की बात है भगवान त्रैकालदर्शी हैं, उनको पता था कि यह फिर से नहीं आयेंगे इसीलिये बार-बार सपने में दर्शन देकर उनको हुक्म दिया यह ही संबंध था। संबंध क्या है गुरु मेरा ही रूप हैं। सुबह उठ कर उसमें मेरा दर्शन करो। फिर उन्होंने बाबा की भक्ति कराई गुप्त रूप से बुलाया करते थे कहते थे बेटा बाबा पूर्ण ब्रह्म हैं। दूसरों को केवल जटा धारी राम की उपासना बताई लेकिन इस शरीर को अलग बुला-बुला कर कहते थे भेद नहीं है परन्तु तेरे लिये वो ही सब कुछ हैं। आखिर आठ बरस में तो यहाँ तक हुआ उन्होंने बाबा की भी ढेरी लगानी शुरु कर दी। फूलों की नौ ढेरियाँ लगाते थे अब दस ढेरियाँ लगाने लगे थे। कहते दसवीं ढेरी उन्हीं की तो है। मैं बोला किसकी बोले भगवान साईं नाथ की। साईं बाबा जी की है थोड़ी देर पहले आये थे और हमारे राम से पूजा लेकर गए। ऐसा कहते-कहते

प्रेम में डूब गये उनकी याद करते। यह उनका संबंध था। उधर पीछे नौ नागेश नाथ और नौ के नौ नाथ गुरु भगवान श्री दातात्रे जी के शिष्य थे इधर भी श्री दातात्रे जी बाबा साईं नाथ के रूप से प्रगट हैं और उधर नौ नाथ गुरु नागेश नाथ स्वामी जी के रूप से प्रगट हैं। कितना सुन्दर संबंध चलते रहा। वो इस शरीर को अलग से बाबा की भक्ति में लगाये। जब-जब बात करते थे अलग दरवाजा बन्द करा कर करते थे। इसीलिए शरीर छोड़ने के पहले से ही बाबा की भक्ति में लगा दिया। भेद तो नहीं है, राम और साईं में भेद नहीं है। लेकिन साईं का खेल शुरु कराना था। उन्होंने बाबा का खेल शुरु करा दिया।

अभी जो खेल हो रहा है या पहले हुआ वो सब बाबा साईंनाथ का खेल था। लेकिन बाहर से वो इतने बड़े संत थे १६५ बरस के थे लेकिन वो आखिर तक माँ के बच्चे थे। इस शरीर में से जो सेवा हुई है वो आज के दिन से ही शुरु हुई है। खेल पूरा का पूरा बाबा का है अहम् का नहीं है। ईश्वर का खेल होता है इस बात को दृढ़ करना है। जो आपके सामने बैठा है वो बच्चा है। वो जगत् के सामने बैठे थे वो भी बच्चे ही थे। जो करनी वहाँ से हुई वो ही खेल यहाँ से हो रहा है। पूरा का पूरा माँ का खेल है। जहाँ पर भी गुरु बैठे हैं, वो ही बैठे हैं उनके बगैर कोई दूसरा गुरु नहीं हो सकता है। वो ही अपने इस रूप में से सेवा करते हैं। तो बोले कहानी वहाँ से शुरू होती है गुरु नागेश नाथ नौ नाथों के चौथे गुरु, उन्होंने भी जगत् में आकर सेवा किया, हजारों लोगों को सत् मार्ग बताया। जगत् के सामने बड़ा सुन्दर आदर्श रखा ज्ञान धर्म भक्ति का। आज भी जिस समय उनकी याद आती है तो मन भर जाता है। याद रखो शरीर बदल गए खेलने वाला नहीं बदला। शरीर बदल गये खेलने वाला वो ही रहा। जो आदि अनादि शक्ति वहाँ से खेल कर रही थी उसी का खेल अभी भी हो रहा है। खेल रुका नहीं, इस पावन पवित्र दिवस को उस आदि अनादि शक्ति का फिर से पूर्ण खेल शुरु हो गया। जो कुछ है बाबा आप हैं। उस सर्व सामर्थ ईश्वर के बिना दूसरा कोई है ही नहीं और दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। जो कुछ है वो त्रैलोकी नाथ आप हैं। वो शरीर १६५ बरस तक रहा दिन-रात एकता की आवाज निकलती

रही, सत् की आवाज निकली जितनी देर इस शरीर को वो रखें, आदि अनादि अनंत शक्ति की आवाज जगत् को मिलती रहेगी। मैं कौन हूँ, क्या हूँ मेरा मार्ग क्या है उस पर चलो। इसको दृढ़ करना है। गुरु के रूप अलग-अलग होते हैं अंदर से गुरु एक ही होते हैं। उनके अंदर गुरु शक्ति एक ही होती है और वो गुरु शक्ति है बाबा साईं नाथ, समझना है।

यह पूर्ण का खेल है पूर्ण को पाने के लिए है। बाबा साईं नाथ का पूर्ण खेल है, बाबा साईं नाथ का पूर्ण रास्ता यहाँ से बताया जा रहा है इसको समझने का है। यहाँ से पूर्ण बाबा साईं नाथ का पूर्ण खेल हो रहा है और उस पूर्ण को पाने के लिए हो रहा है। पूर्ण का खेल हो रहा है। इसमें रत्ती भर भी मिलावट नहीं है। पूर्ण का पूर्ण खेल है और उन्हीं का है। यह शरीर जो आपके सामने बैठा है उनके अंदर से यह पूर्ण का खेल तो जरूर हो रहा है लेकिन यह एक नन्हा बच्चा है। एक नन्हा बच्चा माँ की गोद में खेलना जानता है और कुछ नहीं जानता। पूर्ण सत्यस्वरूप से आपको सब कुछ बताया जा रहा है। यह बच्चा केवल अपनी माँ की गोद में खेलना जानता है। माँ जो रास्ता बताती है ये बताते जाता है। उसमें इस शरीर का कुछ भी नहीं है। बाबा साईं नाथ के, आदि परम गुरु के जो बच्चे होते हैं वो खाली उनको ही जानते हैं। इससे अलग वो कुछ भी नहीं जानते। बाहर वाले कुछ भी समझें लेकिन ये बच्चा समझता है कि पूरा का पूरा खेल मेरा नहीं है। माँ का है इस बच्चे का नहीं है। जो एक बच्चे को त्रैलोक पावन माँ की गोद में रस मिल सकता है वो और कहीं नहीं मिल सकता। बाहर देखने वालों को लगता है यह सेवा का कार्य कर रहा है। यह एक भुलावा है, बच्चा माँ की गोद से चिपटा रहता है सारा का सारा खेल उनका है। यह जो वाणी आप सुनते हो, ग्रंथ पढ़ते हो यह पूर्ण ग्रंथ हैं। यह सब उनके रचे हुये हैं। इस शरीर का कुछ भी नहीं है। मैं सच कहूँ मैं खाली उनकी गोद में खेलना जानता हूँ। मेरे को इतनी भी समझ नहीं है जितनी तुमको है। मेरे को बस एक ही समझ है यह मेरी माँ है, माँ की गोद में खेलना है। माँ की गोद से बिछड़ना नहीं है एक पल भी। सारा आनंद इस माँ की गोद में मिलता है। इसीलिए आज का दिन उन्होंने पूर्ण दिवस दिया है।

अमृत से भरे हुये हैं ये ग्रंथ शायद ही ऐसे ग्रंथ बने हैं। श्री साईं गीता से जो कुछ मिलेगा वो दुनियाँ में और कहीं से नहीं मिलेगा। जो कहीं नहीं मिलेगा वो तुम्हें साईं गीता से मिलेगा। तो इसको दृढ़ करके फिर यह दिवस मनाना है। खेल भी पूर्ण है, वाणी भी पूर्ण है और ग्रंथ भी पूर्ण है। शरीर चले जायेगा वाणी उनकी जगत् के पास रह जायेगी। कीमत सब वाणी की है। शरीर की नहीं है। शरीर थोड़े समय के लिए रहता है। और बताऊँ माँ के बच्चे माँ की गोद में रहते हैं माँ की इच्छा से बंधे आते हैं। वो यहाँ पर भी माँ की गोद में ही रहते हैं। यहाँ फिर भी इधर-ऊधर ध्यान चले जाता है। इसीलिए समझने का है खेल पूर्ण माँ का है, साईं माँ का है, वाणी के एक-एक शब्द में उनको देखना है। यहाँ से जो भी वाणी बोली जाती है वो शुद्ध मन से जीवन में लाओ। पूरी की पूरी वाणी बाबा साईं नाथ की वाणी है। जो उसमें पूर्ण विश्वास करेगा वो पार हो जायेगा। जो इसमें जरा भी शंका करेगा वो डूब जायेगा इतना कह कर मैं खत्म करता हूँ।

" जै मैय्या "

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।
ॐ साईं श्याम सुन्दराय नमः ।।
ॐ साईं लक्ष्मी नारायणाय नमः ।।
ॐ साईं माधवाय नमः ।।

जै जै गिरधर गोपाला जै जै गिरधर गोपाला ।
जै जै बृन्दावन बिहारी जै जै जै नन्द के लाला ।।
जै जै जै यशोदा नन्दन जै जै जग के प्रतिपाला ।
जै कान्हा जै मुकुन्द माधव जै हरि केशव किर्पाला ।।

"ॐ श्री साईं"

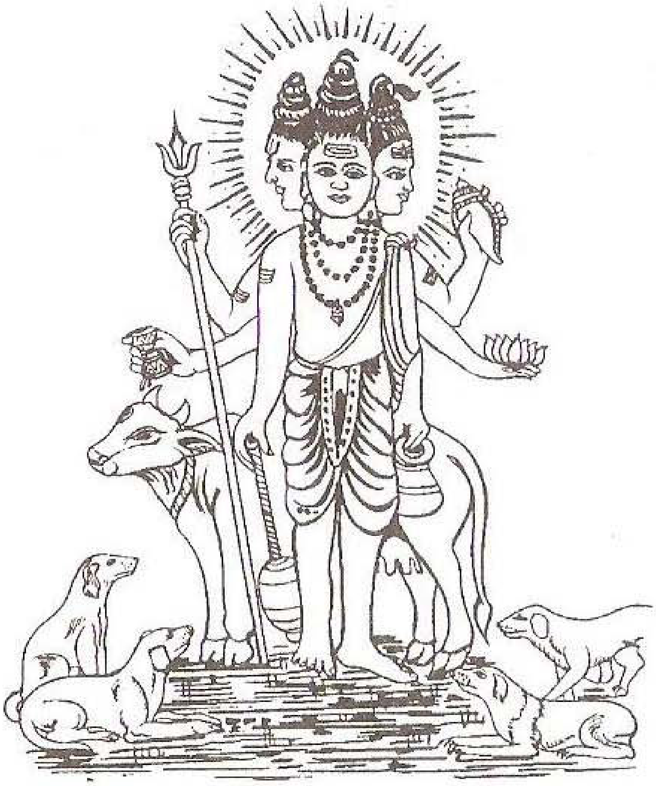

साईं दत्त भगवाना

जिन दत्तात्रेय गुण गाये।
तिन उल्टे लेख मिटाये।।
जिन दत्त को सीस नवाया।
तिन कबहुँ न लागे माया।।

जिन दाता को है जाना। तिन अपना आप पहचाना।।
जिन दत्तात्रेय अपनायें। तिन के बलि बलि हम जायें।।
जिन दत्त को सदा आराधा। तिन कबहुँ न होये बाधा।।
जिन दाता को मन दीना। तिन जीवन का रस लीना।।
जिन दत्तात्रेय शरण आये। तिन मन के भर्म मिटाये।।
जिन दत्त की कीनी पूजा। तिन इक बिन दिखे न दूजा।।
जिन दाता में मन राखा। तिन आतम् अमृत चाखा।।
जिन साईं दत्त इक माना। तिन पायो सत्गुरु नामा।।
जै जै प्रभु पूरण कामा। जय साईं दत्त भगवाना।।

"ॐ श्री साईं"

माँ का आँचल

ध्यान से सुनो नंगे आये और नंगे ही जाना है। बीच में यह ढकने की क्या जरूरत है। सदा नंगे रहो। बीच में जो अपने को बहुत ढक कर रखता है वो ही अज्ञानी है। वो ही महामूर्ख है। जरूरत अनुसार कुछ भी प्रयोग कर लेना। बहुत ढकने की क्या जरूरत है। जरूरत के अनुसार जो माँ दे दें जीवन का निर्वाह करने के लिए उसमें रहना, ढकने की क्या जरूरत है। ज्ञान उसी को मिलता है जो अपने को बहुत ढकता नहीं है। बहुत ज्यादा ढक कर रखने से सच्चाई छूट जाती है। सच्चाई को पाना है तो नंगे रहो। Remove this trifling of becoming. माली झाड़ की कटाई करता है, वृक्ष की कटाई करता है तब ही वृक्ष ठीक रहता है। जब इस नंगेपन के ऊपर कुछ बनने लगे तो जो ऊपर बने हो उसको काट देना चाहिये। नंगे आए नंगे जाना है नंगे रहने में ही सब कुछ है। नंगे आए नंगे जाना है। अनुभव करो मैं हूँ। ओर इसको काट डालो मैं ये हूँ मैं वो हूँ। ये माली काटता है। तुम भी काटते जाओ ये मत सोचो मैं ये हूँ मैं वो हूँ। चादर में सिलवट आ जाती है सच्चाई को पाना है तो प्रेस मारो सिलवट आती है तो प्रेस मार कर सीधा करो। मैं ये हूँ, मैं वो हूँ, मैंने ये किया, मैं ये करूँगा, नंगे रहने में ही आनंद है। बहुत वस्त्र मत पहनो। अपने को ढक कर मत रखो नंगे रहो। ये संसार का जो वलेवा है ये ही हमें ढकता है। चार दिनों का मेला है नंगे आए नंगे जाना है बीच में ढकने की क्या जरूरत है। जो कुछ माँ देती हैं शरीर के निर्वाह के

लिए ठीक है लेकिन ज्यादा मत ढको। मूर्ख वो ही है जो अपने को ज्यादा ढक-ढक कर रखता है।

कल्याण का मार्ग क्या है? बच्चा बन कर रहना। बच्चा बन कर आओ। सारी उम्र क्यों न बच्चा बन कर गुजारें। बड़ा बनने की जरूरत ही क्या है। माँ के आसरे जीओ। क्यों न माँ के आसरे रहें। माँ के आसरे जीवन व्यतीत करो। बाबा साईं नाथ के दरबार में आए हो तो छुटकारा पाने के लिए आए हो रस्मी तौर से मत आओ। मैं को छोड़ दो। अरे महामूर्ख सोचता है मैं अपनी मर्जी से मंजिल तक पहुँच जाऊँगा। तुम न अपनी मर्जी से आये हो और न अपनी मर्जी से जाना है फिर बीच में चार दिनों के लिए अपनी मर्जी क्यों? ढकने की क्या जरूरत है। नंगा क्यों नहीं रहता है। खेल तमाशे में जन्म गंवा दिया। किसी का बन कर रहोगे तो किसी की जिम्मेदारी हो जायेगी हमें हाथ पकड़ कर चलाने की और अपनी टैं में रहोगे किसी का बनोगे नहीं तो सीधा काल के मुख में जाओगे। **बचाने वाला एक बाबा साईं नाथ है कितनी रक्षा किया क्यों नहीं जानता।** अंतरयामी ईश्वर की इच्छा के बिना हो ही क्या सकता है। घट-घट वासी भगवान सबके हृदय में हैं वो जानते हैं कैसा कोई मुझको भजता है। उसी बात से मैं उनका मिलता हूँ। संसार, धन-दौलत, जगत् मिलेगा। जो माँ जान कर उनका बच्चा बन कर दिन रात उनके लिए तड़पता है माँ उनके लिए तड़पती हैं। कितना ज़मीन आसमान का फर्क है दोनों में। एक दुनियाँ में बहुत माँगने वाले आते हैं तो उनकी झोली में दो-चार टुकड़े डाल दिये जाते हैं। ले तू ले, तू इसी में खुश है तो ले जा ले। जो माँ को चाहता है, माँ को पाना चाहता है माँ के बिना कुछ भी नहीं चाहता माँ उसके अंग संग रहती हैं, दिन-रात। बच्चा माँ को पाता है। पहले माँ बच्चे को अपनाती है फिर बच्चा पूर्ण माँ को पाता है। पहले माँ बच्चे को अपनाती है फिर बच्चा पूर्ण माँ को पाता है। जो हुआ सो हो गया सुबह का भूला यदि शाम को भी घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाएगा। तुम यदि आज के दिन यहाँ पर बैठकर शुद्ध मन से प्रार्थना करोगे हे माँ हमें नंगा ही रहना है नंगे आए नंगे जाना है। अपनी भी तैयारी है, माँ जो तू दे उसी में निर्वाह करेंगे हम अपने को

ढक कर नहीं रखेंगे तो माँ तुम्हें अभी अपना लेंगी।

गुरु का रूप बच्चे का रूप होता है। बच्चा नासमझ होता है। नासमझी की उस स्थिति के अंदर से सारा खेल हो रहा है। जहाँ प्रकाश भरा हुआ है वहाँ तक पहुँचना है। सच्चाई की आवाज़ हर एक के अंदर से आ रही है। वो आवाज वहीं की वहीं रह जाती है। जो ढका रहता है नंगा नहीं रहता है वो माया में फँसा रहता है। जो नंगा रहता है उसे मैं सुख, चैन, आनंद, शांति देती हूँ। सच्चाई पानी है तो गुम होना पड़ेगा अपनी माँ में, सच्ची माँ में। गुम होने का मतलब यह जो अपने को ढक कर रखता है उसको छोड़ना पड़ेगा। माँ की गोद का रस अमृत पीना पड़ेगा। बच्चे को ढ़कने की क्या जरूरत है। बच्चे को माँ ढकती हैं अपने आँचल से ऐसे ढक लेती हैं। नज़र न लग जाए। बच्चे को ढकने की जरूरत है तो माँ उसकी जरूरत को देखेगी तो ढक देगी।

उनकी आँखो की चमक में इतनी दया और करुणा है कहते हैं मेरे संदेश को कोई ले ले। इतनी करुणा से जगत् की ओर देख रहे हैं और साथ बोल रहे हैं मेरे संदेश को समझ कर ले लो दया के हाथ को लौटाओ नहीं। जो अपने आप को ढकता है नंगा नहीं रहता है वो दया के हाथ को लौटा देता है।

जो अपने आप को ढकता है, ढक-ढक कर रखता है माँ की दया के हाथ को ढक लेता है। ढक कर रहने की जरूरत होयेगी तो माँ ढक लेगी अपने आँचल से, अपने सीने से लगा लेगी। यही एक रास्ता है उद्धार होने का दूसरा और कोई रास्ता नहीं है उद्धार का।

" जै मैय्या "

ॐ साईं गुरुमूर्तिये नमः।।

गुरु के भक्त की संगत ढूँढ ढूँढकर कीजे।
भक्त गुरु चरणों का लोभी ता स्यों सन्मति लीजै।।

"ॐ श्री साईं"

भेद कहाँ से आया

इच्छया में रहते जाओ, इच्छया को भंग नहीं होने दो। इच्छया की पूर्ति ः ही जीव का कल्याण है। हमें अपने आप को चलाने दो। सबसे जरूरी काम ज करने का है वो ये है कि हमने अपने आप को चलाना बन्द करना है। ईश्वर क अपने आप को चलाने दो। ईश्वर हमारे मन, बुद्धि, शरीर को चलायेंगे तो को: बिगाड़ नहीं हो सकता। होनी को होने दो। होनी को होने देने में ही जीवों क कल्याण है। हम जिस कार्य के लिए जगत् में आये हैं वो कार्य पूरा होना लाज़मं है। इस सच्चाई को दृढ़ करो। ये जगत् हमारी लीला भूमि है। हम यहाँ अपन खेल करते हैं हम किस कार्य के लिए जगत् में आए हैं वो साईं गीता के पहले पेज की पहली तस्वीर में साफ बता दिया है, किसी को धोखे में नहीं रखा। ट हमारा कार्य है वो कार्य पूरा होना है। **झूठ, छल, कपट मिटाने साईं जग मे आए।** जब-जब हमारा अवतारी कार्य होता है, इसीलिए होता है झूठ, छल, कपट, फरेब मिटाने के लिए। इस बार भी इसीलिए आया हूँ। **जो बच्चे बन जाएँगे उनको अपनी गोद में ले लेंगे। उनको इस भव से पार लगा देंगे। जो दूसरों की हानि करेंगे झूठ, छल, कपट, फरेब चलाएँगे वो अपनी करनी को भोगेंगे।** खेल होना लाज़मी है। खाली वाणी सुनने से जीव सीखता नहीं है। वाणी सुनने से सीखता तो हमें हर बार इतना खेल ना करना पड़ता। हमने साईं गीता जगत् को सिखानी है, अभी तक पढ़ाई है अब सिखानी है। पूरी साईं गीता का सार क्या है जो जैसा करता है वैसा भरता है। अब अनुभव करना है जिसने जीवन में जैसा किया है वैसा आकर अपना कर्मभोग भोग लिया। जगत् में बहुत बड़ा महान कार्य हो रहा है। लाखों जीवों में हमारा संदेश पहुँच रहा है। लाखों अमृत पी रहे हैं और लाखों और भी अमृत पिएँगे। इसको समझने का है। इस खेल में बाधा नहीं डालना चाहिए।

ये खेल निर्विघ्न समाप्त होना चाहिए ये ही हम सबने देखना है लेकिन ऐसे

हो नहीं रहा है खेल में बाधा डाले जा रही है, वो बाधा भी दूर होना चाहिए। जगत् को एकता का पूर्णता का संदेश देना है। एकता और पूर्णता का अमृत पिलाना है। जहाँ एक तरफ इतना अमृत पिलाया जा रहा है वहाँ दूसरी जगह क्या हो रहा है। जब उल्टी-उल्टी चीज़े जगत् में शुरु होती हैं तब ईश्वर का आगमन होता है। तब गुरु जगत् में अपना काम करते हैं। जो छल, कपट, फरेब, धोखा करता है फिर हमारे पास चारा ही क्या है। गुरु का दरबार उद्धार का दरबार होता है, संहार का नहीं होता। मत सोचो कोई नहीं देख रहा है। तुम्हारे एक-एक विचार को एक-एक हरकत को देखा जा रहा है। एक-एक चीज़ तुम्हारे सामने रखी जाएगी। जब हम सच्चाई से गिर जाते हैं तभी उल्टी चीज़ें होती हैं। हमने यह दरबार लगाया है सबको सच्चाई सिखाने के लिए, सबको एकता में लाने के लिए, प्यार सिखाने के लिए, प्रेम सिखाने के लिए, इन चार चीज़ों के लिए दरबार लगाया है। हमने यह दरबार लगाया है कि हर कोई अपने आप को मिटा कर ईश्वर में मिल जाए। जब हम अपने को मिटाए बिना हम वहाँ तक पहुँचते हैं तो वहाँ गिरने की जगह है।

जै वीरों के वीर महावीर, जै वीरों के वीर महावीर।।

जगत् की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। जितना दुःख आज है उतना कभी नहीं था। जरूरत है मेरा संदेश घर-घर पहुँचाया जाए। मेरी वाणी घर-घर पहुँचाई जाए। सत् की वाणी सत् की होती है। सत् की वाणी जीवों को झंझोड़-झंझोड़ कर जगाती है। सत् तक पहुँचने के लिए सत् की वाणी की हमें बड़ी जबरदस्त जरूरत है। सत् ने जिसका उद्धार करना होता है सत् उसको अपनी वाणी सुनवाता है। अपने मुख से अपना मार्ग बताता है। अपने तक पहुँचने का रास्ता बताता है फिर जीव सच्चे मन से जो वाणी सुनी होती है उस वाणी पर चल कर एक हो जाता है। हम सेवा करते हैं तो हमें उनकी वाणी के एक-एक शब्द की कीमत लगानी है। **लाखों प्राणी जाग उठेंगे सुन मेरी आवाज़।** ये वाणी हमारे कानों में गूंजनी चाहिए। मेरी आवाज में मेरी शक्ति है, मेरी सत्ता है। **जागा कौन है? जो अपने लिए नहीं जो दूसरों के कल्याण के लिए, भले के लिए जीता है। जागृत आत्मा कौन सी है? जहाँ राम और रहीम में भेद नहीं है वहाँ**

जागृति है। आज से test लगाओ कितनी सोई आत्माएँ जागृत होंगी। जागृत आत्मा कौन सी है? जहाँ राम और रहीम में भेद नहीं है इसीलिए मैं अस्सी बरस तक शिर्डी में रहा, मस्जिद में बैठा, मंदिर में भी बैठ सकता था। शिर्डी में हर धर्म, हर जाति के लोग मिलेंगे हिन्दु, मुसलमान, ख्रिश्चन, पारसी, देश-विदेश से लोग आते जा रहे हैं बिजली की तरह फैलते जा रहा है। हर धर्मों को सच्चाई मिलनी चाहिए। सबको मेरी तरफ से बधाई दो। क्यों? साईं गीता में कलाम आए हुए हैं कलाम आने से दूसरे धर्मों का भेद निकल जाता है।

मेरा रास्ता universal है। सत् के एक हजार संदेश एक जगह से ११० ज़बानों में लिखे जाएंगे। एक तेरे सिवाय दूसरा कोई बता नहीं सकता बोल नहीं सकता। वाह-वाह धन्य है तू धन्य है तेरा खेल। मुझे मेरा काम करने दो तुम मत करो, मुझे अपने को चलाने दो तुम मत चलो फिर देखो क्या होता है। जब तक हम अपने को चला रहे हैं फिर पाप-पुण्य है। जब वो चला रहे हैं फिर कौन सा पाप, कौन सा पुण्य है। बाबा हथकड़ी से छुड़ाओ हमको। **बाबा से, सब से सच्चा प्यार करो। सब धर्मों में एक मैं हूँ, एक सच्चाई है। जागृत आत्मा वो ही है जिसके अंदर राम और रहीम में भेद न हो।** जागृत आत्मा वो है जिसमें जागृति आई है अंधकार दूर हुआ है। इस सच्चाई को अच्छी तरह से समझने का है। जो हमारे इष्ट चाहते हैं वैसा करना है। हमने वो काम करना है जो हमारे इष्ट चाहते हैं। धर्म, मजहब, जाति में भेद नहीं करना। ॐ अल्लाह ॐ अल्लाह। **ॐ और अल्लाह में भेद क्या है। शिरडी में हर रोज अल्लाह मालिक अल्लाह मालिक कहते थे शिरडी में सबकी मुरादें पूरी करते थे। अल्लाह मालिक अल्लाह मालिक इस सच्चाई को समझने का है। भेद-भाव की दीवारें तोड़नी हैं। सबके साथ एक होकर रहना है, मिलकर रहना है।** इस सच्चाई को समझने का है। आज भेद-भाव के कारण एक दूसरे के गले काटे जा रहे हैं। भेद है कहाँ? फर्क क्या है? जितनी राम-नाम की महिमा गुरु ग्रंथ साहब में है और किसी ग्रंथ में नहीं है। हम विष्णु सहस्त्र नाम बड़े भाव से पढ़ते हैं वो पूरा का पूरा विष्णु सहस्त्र नाम गुरु ग्रंथ साहब में दिया है। भेद कहाँ है? हम रामायण कितने भाव

से पढ़ते हैं।

भेदभाव की दीवारें मिटानी हैं प्यार करना है बाबा ताजुद्दीन से बाबा फरीद से। हिन्दुओं के लिये क्या नहीं किया उन्होंने इस सच्चाई को समझने का है। **सबसे प्यार करना है सबसे प्रेम करना है। सबको अपने प्रेम के दायरे में शामिल करना है। किसी को बाहर नहीं करना है। ये ही बाबा साईंनाथ का रास्ता है।** Lord Jesus आए। कहाँ? हिन्दुओं के तीर्थ में फिर वो पराये कैसे हो सकते हैं। हम कैसे अपने को अलग जान सकते हैं। Lord Jesus अपने बाबा के समान हमें प्यार करते हैं। Lord Jesus सच्चा प्यार करते हैं फिर पराये क्यों जानना। अलग क्यों जानना। अभी भी ऐसा बोल रहे हैं सच्चा रास्ता वो ही है जिससे भेद दूर हो जाएँ जिससे सब एक दूसरे को जानने लगें। ये सच्चाई है God is love, love is God. प्रेम ही भगवान है। भगवान ही प्रेम है। एकता में रहो। खटखटाने का मतलब शरणागत हो जाओ। हम तेरे हुक्म में रह रहे हैं अब अंदर का द्वार खोलो हमें अंदर ले लो। अंदर जाने का रास्ता बता रहे हैं – अपने को अर्पित कर दो। उनके हुक्म में चलो अंदर रोशनी के द्वार खुल जाएँगे। भेद-भाव की दीवारें तोड़ोगे तो अंदर का प्रकाश बाहर आना शुरु हो जाएगा। ये ही समझने का है। सच्चाई की वाणी एकता का संदेश देती है। जितना भी यहाँ से प्रचार हो रहा है एकता का प्रचार हो रहा है। भेद-भाव की दीवारें तोड़ी जा रही हैं। सच्चाई का प्रकाश जगत् में फैलते जा रहा है इस सच्चाई को समझने का है।

" जै मैय्या "

चींटी की तरह तुच्छ बन के रह। जैसे चींटी चुपचाप चलती है जरा भी आवाज़ नहीं करती, ऐसे ही तू भी चुपचाप जीवन का सफर तय कर। कोई जाने भी ना कि ऐमे नाम का कोई जीव जगत् में आया भी है।

"ॐ श्री साई"

राम नाम आधारा

ईश्वर के विराट स्वरूप के टुकड़े मत करो। सारा जगत् एक ईश्वर का विराट स्वरूप है। सबकी सेवा करो हर एक को ईश्वर के विराट स्वरूप का अंश करके मानो। सर्वत्र के भले के लिए जीना है। सर्वत्र के भले के लिए साधना, नाम सिमरन, ध्यान-धारणा करनी है अपने निजि हित के लिए नहीं, सबके भले के लिए, सबके भले में हम भी आ जाते हैं। फिर कौन साधना कर रहा है अपने से पूछते जाओ। जब सर्व जगत् में एक विराट स्वरूप है फिर कहो दूसरा कहाँ से आया। नाम जप की सबसे उत्तम विधि कौन सी है वह है – कि जब एक पूर्ण के सिवाय दूसरा है ही नहीं तो जप कौन कर रहा है? अगर हम उस एक से अलग होकर जप कर रहे हैं तो हम पूर्ण नहीं हैं। वो पूरण है तो हम भी वही हैं दूसरा और कोई भी नहीं है। नाम जप करते हुए ये भाव रखना मिट्टी का पुतला जप नहीं कर रहा है वो अनंत पूरण अपना नाम आप ले रहा है। इस सच्चाई को दृढ़ करना है पूरण यदि कोई भी साधना कर लेगा तो उसका फल भी पूरण होगा। पूरण की कोई भी की हुई साधना उसका फल अपूरन नहीं हो सकता पूरण ही होगा। इस बात को दृढ़ करो। चलते जाओ जैसे पूरण चलाते जाएँ अपनी अपूरण मैं को आगे मत करते जाओ। कौन किसकी सेवा कर रहा है जब एक पूरण के सिवाय कुछ है ही नहीं तो कौन किसकी सेवा कर रहा है। पहले ये जानो सेवा कौन कर रहा है। सेवा करने वाला है कौन? यदि ये जान कर सेवा करोगे कि पूरण सेवा करता है इतना कुछ जान लेने से तुम्हारे जीवन की भयानक से भयानक आपत्तियाँ कट सकती हैं। अगर तुम भगवान को कर्ता मानकर सेवा कराओगे तो तुम्हें दिखाया जाएगा मैंने कुछ नहीं किया तेरा खेल था मैंने अच्छी सेवा कराया तूने अपनाया नहीं, मिट्टी का पुतला क्या कर सकता है इतना दृढ़ हो जाएगा तो तुम्हारे मुकद्दर में जो धक्के लिखे हैं वो कट जाएँगे। तुमने अपनाना नहीं है। कुदरत की इन सच्चाईयों को समझने का है।

सत्सेवा क्या है मिट्टी का पुतला सत् की सेवा नहीं कर सकता। सत् मिट्टी

के पुतलों का जंत्र बन जाता है नाम मिट्टी का हो जाता है, कराता वो आप है। इसको समझने का है। इससे बड़ा अज्ञान और कोई नहीं हो सकता ये ही बाबा साईंनाथ का चमत्कार है। एक लूले लगड़े को पहाड़ पर चढ़ा देना, एक अनपढ़ से इतने ग्रंथ लिखा लिए। किसी जीव ने लिखा वो ही झूठ है, किसी ने लिखा ही नहीं। बाबा तूने लिखा ये ही देव वाणी है। मनुष्य लिखने वाला तो है ही नहीं। किसने लिखे? उसने लिखे। जहाँ मनुष्यता का अंत हो जाता है वहाँ ईश्वरीय शक्ति आ जाती है। जहाँ हम नहीं रहते हम अपने को मिटा देते हैं वहाँ एक वो ही रहते हैं। अपने को मिटाना है। हम कुछ बनने के लिए गुरु दरबार में नहीं आते, हम टूटने के लिए गुरु दरबार में आते हैं। जो कुछ है तू है हम कुछ भी नहीं हैं। हम टूटेंगे नहीं तो वो अंदर बसेंगे नहीं। तो टूटो। टूट, टूट रे टूट यदि भगवान को पाना चाहते हो तो टूट सब तेरा खेल है मेरा कुछ भी नहीं है टूट अपने में। तेरा काम बन जाएगा। इस सच्चाई को समझने का है।

जै वीरों के वीर। जै जै महावीर।।

गीली लकड़ी अग्नि नहीं पकड़ती ऐसे ही जो मन माया में सारा दिन विचरता है और चाहिए और चाहिए में लगे रहता है उसे ज्ञान अग्नि नहीं पकड़ती, ज्ञान उसके ऊपर से निकल जाता है। श्री महाराज हर रोज यहाँ से गूढ़ वाणी बोलते हैं ज्ञानों का ज्ञान। कोई वाणी सुन कर कितना कुछ ले रहा है, जितना जिसके अंदर माया है वासना है उतना उसके सिर के ऊपर से जाता है। जितना कोई इच्छा में रहता है उतना वो वाणी में रहता है, वाणी को अपने अंदर involve करते रहता है। क्या चाहिये माँ या माया। माँ चाहिए तो अमृत पियेगा चौरासी में से निकल जाएगा। माया चाहिए तो चौरासी में पड़े रहेगा। हमने अपने आप से ये प्रश्न लगातार पूछते चले जाना है। हम ईश्वर की सेवा के लिए जी रहे हैं या वासनाओं की पूर्ति के लिए जी रहे हैं, झूठी मैं के लिए जी रहे हैं या झूठे अहंकार के लिए जी रहे हैं तो गलती हो रही है सुधार करते चले जाना है। माँ मिल गई तो क्या पाना बाकी रह गया यदि संसार मिल गया तो रोते संसार से जाना पड़ेगा। हम

वासना रखेंगे तो एक तुझे पाने के लिए, मरने तक इंतजार की जरूरत नहीं है। उद्धार तो अभी हो गया। लोग लम्बी चौड़ी सोचते हैं मरते समय क्या होगा। तुम्हें अपना साईं चाहिए तो तुम्हारा उद्धार रोकने की शक्ति किसी बाप में नहीं है। प्रभु राम कहते हैं प्यारे सुग्रीव जिसको मैं एक बार अपना लेता हूँ उसको फिर त्यागता नहीं। मनुष्य में और ईश्वर में ये ही भेद है। मनुष्य अपनाता है त्यागता है ईश्वर जिसको एक बार अपना लेते हैं फिर त्यागते नहीं है। किसी ने सुना नहीं होगा कि राम ने त्याग दिया। जो एक बार सच्चे मन से कह देता है 'हे राम मैं तेरा हूँ।' उसके कोटि जन्मों के पाप एक पल में स्वाहा कर देता हूँ। श्रीमद्भागवात भगवान श्री कृष्ण जी का ग्रंथ है। क्या कहते हैं : हे राजन जो चरण माया मृग के पीछे दौड़े थे, जिन चरणों में दौड़-दौड़ कर काँटों से गढ्ढे पड़ गए थे उन श्री चरणों का जो ध्यान करेगा वो बड़ी आसानी से भगवान को पा लेगा। श्रीमद्भागवत पाँचवा वेद है। राम नाम की इतनी महिमा है कलयुग में कि बयान नहीं की जा सकती। मीरा ने सारी उम्र कृष्ण उपासना किया। फिर भी राम नाम की महिमा में कहती हैं **मेरो मन राम ही राम रटे। राम नाम जप लीजै प्राणी कोटक पाप कटे।।**

वेदों में, पुराणों में नारायण के हजारों नाम बताये लेकिन सबका सार एक शब्द में दे दिया **राम**।

श्री राम राम रमेति, रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्र नाम ततुल्यम्, श्री राम नाम वरानने ।।

श्री भगवान शंकर पार्वती जी से कहते हैं – हे पार्वती तू नहीं जानती राम शब्द का उच्चारण श्री भगवान के सहस्त्र नाम के बराबर है। बाबा अस्सी बरस तक जगत् में रहे वे कहते हैं मेरा एक स्वास भी राम-नाम के बिना नहीं जाता था। रात को सोता था तो साथियों को कह कर सोता था कि देखो एक पल भी मेरा राम नाम ना रुकने पाए। वो ही राम मेरे इष्ट हैं। जो भक्ति भाव से राम नाम लेता है वो मुझे बड़ी आसानी से पा लेता है और पार हो जाता है। तीन बेला

पत्ती के ऊपर राम नाम लिख कर शिवलिंग पर चढ़ाओ और साथ में एक नारियल तोड़ दो। राम नाम लेते हुए आटे की गोलियाँ बनाओ, फिर उसे जल में प्रवाह कर दो। जिन मच्छलियों के मुँह में ये राम नाम की गोलियाँ चली जाएँगी उनकी चौरासी कट जाएगी। राम-नाम की कितनी महिमा है। जप करो जितना कर सकते हो। कलयुग में राम नाम जैसी कोई साधना नहीं है इस सच्चाई को समझने का है।

श्री राम जै राम जै जै राम, श्री राम जै राम जै जै राम।।

"जै मैय्या"

जै मात सीते

मंगल तेरो नाम है माई।
सीता कहत अमंगल जाई।।
पावन करनी तेरी सीते।
सुन सुनकर सब अमृत पीते।।
सभी सन्त तेरो गुण गावें।
गुण गाते अमृत वर्षावें।।
नाम तेरे में जो रम जावें।
परम् आनन्द परम् पद पावें।।
जै जै आदि शक्ति मैय्या।
जै सीते जै जगत् रखैया।।

"ॐ श्री साईं"

आप खत्म हो जाएँगे। नाम का अभ्यास जरूरी है। नाम को साथ लेकर कोई भी साधना कर सकते हैं, ध्यान धारणा कर सकते हैं, परन्तु नाम को छोड़कर कोई भी दूसरी साधना करनी गलती है। पिण्ड के अन्दर जो आत्मा है उसको शुद्ध बनाना है। उसके ऊपर से सब संस्कार सब पाप धुलने चाहिए और ये काम नाम ही कर सकता है। राम नाम में बड़ी जबरदस्त अथाह शक्ति है। भूले से भी अपने को कर्ता नहीं मानना चाहिए। जो कुछ है सो माँ हैं। जो कुछ है सो माँ का खेल है। जो कुछ जिस किसी से हो रहा है माँ करा रही हैं। इस सच्चाई को सदा अनुभव करते रहना चाहिए।

"जै मैय्या"

साईं नरसिंहम्

असुरों को वरदान हुआ जग में अंधियारा छायो।
हा हाकार मचा जग अन्दर हरि को नाम छुड़ायो।।
दुःखी भये सब सन्त भक्तजन भजन करत न पायो।
रक्षा करो माँ रक्षा करो सब सन्तन धुनि लगायो।।
भीड़ पड़ी जब हरि भक्तन पर हरि ने आन बचायो।
पारब्रह्म अविनाशी ठाकुर नरसिंह रूप धरायो।।
असुरों का संहार हुआ सब जग में मंगल छायो।
जै नरसिंहम् जै नरसिंहम् तीनों लोक गुंजायो।।

"ॐ श्री साईं"

DIVINE PATH

(From the speeches of 'PAPA' Sri Anand Sai)

My Bossom

All Saints are Sri Maharaj, Baba Sainath

Om Mahakali Maa Divine,
We are Thine, We are Thine

I belong to one and all. I am the Mother of whole universe. I am Kali. I pervade all. I am all. All are in Me, Kali is all. Kali is the universe. Kali is the whole creation. Kali is Maa Divine. Kali creates all these worlds, all these planets. Kali is the Creator, the Preserver and the Destroyer, all in One. Know Kali as such. Kali is Parmatman. Kali is self of all. Kali is Inherient in all for the Divine play. The Divine Mother of the universe, creates the Maya, this play of duality, multiplicity. All bodies, minds and intellects are worked by the Mother of universe, Devi Bhagwati Mahakali. I am the Bliss. My abode is Bliss. My abode is Sach-Dham. My abode is Such-Khand. I am speaking to you all from My abode today. I look down on my creation from My abode. I am inherent in My Creation, not seperate distinct from them. I the Mother of the Universe knows all that happens in the mind of each one. I am the source of all *safurnas*, all thoughts, all moods, all sensations, all sentiments. Understand this and be free. I work all minds, all intellects. My abode is the abode of Bliss. Rarely

can one reach this abode. One can reach here only by My Divine Grace. None can gather My greatness, My Glories. They are endless. I grant Wisdom only to My children. I grant them Wisdom so that they reach My abode. I help them to reach Me.

Be crystal clear. Only one who looses himself in Me reach this *Dham* of Eternal Bliss. Only one who has becomc My pet child can reach My Bossom. One who is full of concept and ego, one who thinks he is seperate being from Myself can never attain Me. I am Eternal light, Eternal Bliss, Eternal joy. My creation is only an infinite part. I am millions and billions time greater than creation. The creation is in Me. I am not confined to creation, I am in creation but millions and billions time greater than the creation. I am inpathomable, know Me as such and give your false ego.

Sai is Mai, Mai is Sai. Both are One. This child is Me. He and Me are One. I love Him. He is My most loving child. He is Mine, I am His. None can seperate us. This is My Eternal home. He shall always remain in My Bossom. I am He, He is I. There is no difference. The difference stands only apparent, not real. I and He are One. Don't forget this Darbar is Baba Sainath's Darbar. This is Sai's Darbar. Sai is Mai, Mai is Sai.

"Jai Maiya"

Renounce the idea of doership. God alone is the real doer. If you accept doership of actions, you shall be bound by the *Karma bandhan.* You shall therely be caught in the unending transmigration of souls.

"Om Sri Sai"

Glimpses of Truth

I bow most humbly
to my Lord Sai Samarth
Those who are blessed
with His love
Are ever in rapture,
in ecstacy, in mirth,
Blessed indeed are they who
Have given themselves over to Sai
They alone have reaped the
Reward of this birth
Sacred are their forms,
Their minds, their deeds
Sanctfied is their sajourn
on this earth

"Om Sri Sai."

GEMS OF WISDOM

By

SRI ANAND SAI *(The Master)*

❖ *Om Sri Sai Ganeshai Namah.* ❖

- ❖ Cleverness and craftiness are stumbling blocks in the path of spirituality.
- ❖ Everything belongs to us for our use. Nothing belongs to us to possess.
- ❖ The moment we are separated from the One Life, all sorts of worries and problems stare us in the face.
- ❖ Stand aside and enjoy and beauty and rhythm of One Pulsating Divine Lite.
- ❖ The increase in the external possessions impoverishes the soul.
- ❖ The aim of all sadhna is to move out of the Gulf nto the High Seas.
- ❖ First offer everything to Him and then enjoy.
- ❖ One gets the fruits of one's labour according to one's past karmas.
- ❖ Selfless service purifies the mind.
- ❖ Earn your livelihood thrugh fair means.
- ❖ True devotion does not allow hankering after worldly objects or beings.

- Single mindedness of purpose is what is required for the attainment of the goal.
- Ego fouls the spiritual atmosphere.
- Non-attachment sows the seed of success in the spiritual path.
- Have your roots in the Being within.
- Divine Will is Supreme in all affairs, spiritual and mundane. Know this and be free.
- Crucify your ego and inherit His Unbounded Treasures.
- Do not partake of the forbidden fruit. Have motherly bhav for all women.
- Anger is a deadly enemy. It burns all our *shubh karmas*.
- God and His name are not different. He is where His Name is.
- The past karmas of a man determine his destiny.
- Without the control of the *Indriyas* success is not possible.
- The Divine Mother's Worship is the harbinger of all blessedness and bliss.

"Om Sri Sai."

साईं-स्मृति

वर्तमान में साईं आदर्शों को जीवन में उतारने की आवश्यकता है। साईं के रास्ते पर चलने के लिए समर्पण और निष्ठा की आवश्यकता है। चित्त बड़ा चंचल है और मन मनमानी किए बिना मानता नहीं। दोनों पर काबू पाए बिना सफलता हासिल नहीं होती। इनके नियंत्रण से ज़िदगी में स्पष्टता, साफगोई आती है। सफलता की मात्रा भौतिकता में हो या आध्यात्मिकता में, बाधाएँ तरह-तरह की शक्ल बदलकर आती हैं। जिनकी नज़र बारीक है वे इसे पकड़कर दूर कर लेते हैं। प्रार्थना करने वाले के लिए तन्हाई, एकान्त ही अच्छा रहता है, क्योंकि इसी वक्त उसका वास्ता सीधे साईं से रहता है। यदि आपसी बात-चीत में, चर्चा में हम एक-दूसरे की तारीफ करते रहे या फिर दूसरों की निंदा-बुराई करते रहे तो यह आदत भी साईं को पाने के मकसद में बाधा बन सकती है।

अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानना भी ठीक नहीं। ज्ञान का खतरा अहंकार और भक्ति का खतरा आलस्य है। मनुष्य के भीतर जो मैं का भाव होता है अहंकार उसी को हृष्ट-पुष्ट करता है। अहंकार को मिटाने का कोई सीधा तरीका नहीं है। अपने भीतर गहरे में उतरकर इसे जानना ही इसे मिटाने का तरीका है। साईं की सेवा में खुद को समर्पित कर देना ही सच्ची शरणागति है। पूजा भक्ति में साईं तन शुद्धि से प्रसन्न नहीं होते बल्कि मन शुद्धि से प्रसन्न होते हैं। पूजा में हम सभी को अपने भावों को शुद्ध रखना चाहिए। तभी हमें पूजा का फल प्राप्त होगा।

– *शरद श्रीवास्तव,* जयपुर

श्रद्धांजली

प्राणप्यारे पापा श्री आनंद साईं जी की प्रिय आत्मा श्रीमती स्नेह राय दि. 1 जून 2011 को अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर श्री गुरु चरणों में सदा-सदा के लिए समा गयीं। श्री आनन्द साईं जी को वै बड़े प्रेमभाव से भजन सुनाती थीं। सत्‌गुरु की इस प्रिय आत्मा को हम सभी गुरुभाई बहन नमन करते हैं। श्री सत्‌गुरुदेव के परम पावन चरण कमलों में प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्री चरणों में वास दें और उनके परिवार जनों को शांति प्रदान करें।

– *संपादक*

आनंद नाम जपो साधो आनंद नाम जपो

गुरु पूजा के पावन अवसर पर प्राणप्यारे सत्गुरु जीवन आधार श्री आनंद साईं जी के प्रशाद स्वरूप यह आनंद नाम माला श्री गुरु चरणों में सादर प्रस्तुत है।

हे मेरे प्यारे पापा, हे मेरे प्यारे आनंदा।
समर्पित हैं तुझको ये नाम तेरे आनंदा।।

हे दीन दयाले आनंदा।
हे प्राणाधारे आनंदा।
हे प्राणनाथा आनंदा।
हे प्राणप्यारे आनंदा।
हे परम गुरु आनंदा।
हे चकवाल प्रगटाए आनंदा।
हे सुभद्रा पुत्राए आनंदा।
हे राम रमाए आनंदा।
हे बाल गोपालाए आनंदा।
हे मुरली मनोहराए आनंदा।
हे जानकी नाथाए आनंदा।
हे राधा रमणाए आनंदा।
हे गोपी वल्लभाए आनंदा।
हे पार्वती पतियाए आनंदा।
हे भोले शंकराए आनंदा।
हे साईं रूपाए आनंदा।
हे त्रिलोकी नाथाए आनंदा।

हे भक्त रक्षकाए आनंदा।
हे सर्व सामर्थाए आनंदा।
हे शक्ति पुंजाए आनंदा।
हे महाकाली रूपाए आनंदा।
हे महालक्ष्मीमाए आनंदा।
हे सरस्वतीमाए आनंदा।
हे ज्ञानेश्वराए आनंदा।
हे भक्तिदाताए आनंदा।
हे ज्योतिस्वरूपाए आनंदा।
हे जग रक्षकाए आनंदा।
हे जग पावनाए आनंदा।
हे साईं गीताए आनंदा।
हे अमृत सागराए आनंदा।
हे अमृत पुत्राए आनंदा।
हे करुणा सिंधुआए आनंदा।
हे भव भय हरणाए आनंदा।
हे भव तारकाए आनंदा।

हे सुख कर्ताए आनंदा।
हे दुखहर्ताए आनंदा।
हे अनाथ नाथाए आनंदा।
हे गुरु नाथाए आनंदा।
हे दातात्राए आनंदा।
हे हनुमंताए आनंदा।
हे नारायणाए आनंदा।
हे ब्रह्म रूपाए आनंदा।
हे गंगा पुत्राए आनंदा।
हे अवधूताए आनंदा।
हे नौ नाथाए आनंदा।
हे नन्हे मुन्नू आनंदा।
हे दया के सिंधु आनंदा।
हे प्रेम के सागर आनंदा।
हे परम उजागर आनंदा।
हे सीतारामदासाए आनंदा।
हे पूर्ण पुरुषाए आनंदा।
हे मंगल कर्ताए आनंदा।
हे अमंगल हर्ताए आनंदा।
हे मनोहर रूपाए आनंदा।
हे आकर्षण शक्तियाए आनंदा।
हे आकर्षण शक्तियाए आनंदा।
हे आनंद दाताए आनंदा।
हे शांति दाताए आनंदा।
हे सत्चित आनंदाए आनंदा।
हे मुनिमन भावनाए आनंदा।

हे अंतरयामियाए आनंदा।
हे सर्व साक्षियाए आनंदा।
हे सर्व धर्म समन्वाए आनंदा।
हे सर्व निज स्वरूपाए आनंदा।
हे अलख निरंजन आनंदा।
हे ज्योत निरंजन आनंदा।
हे विष्णु रूपाए आनंदा।
हे त्रिगुणातीताए आनंदा।
हे सत् पथ दर्शकाए आनंदा।
हे आत्म पद प्रदायकाए आनंदा।
हे विकार संहारकाए आनंदा।
हे पाप विनाशकाए आनंदा।
हे दरिद्री हर्ताए आनंदा।
हे सत् संपति दाताए आनंदा।
हे अखंड आत्माए आनंदा।
हे आसुतोषाए आनंदा।
हे आत्म तत्वाए आनंदा।
हे आत्म स्थिताए आनंदा।
हे शरणागत रक्षकाए आनंदा।
हे षटविकार रहिताए आनंदा।
हे मायातीताए आनंदा।
हे हृदय ग्रंथि भेदकाए आनंदा।
हे काल दर्प दमनाए आनंदा।
हे आत्म शांति प्रदाए आनंदा।
हे संतोष प्रदाए आनंदा।
हे सद सम्मति दाताए आनंदा।

हे परम पद प्रदाए आनंदा।
हे देव आदि देवाए आनंदा।
हे उलट शक्ति नाशकाए आनंदा।
हे सिद्धि विनायकाए आनंदा।
हे शोक विनाशकाए आनंदा।
हे भोग विनाशकाए आनंदा।
हे सर्वेश्वराए आनंदा।
हे रोग विनाशकाए आनंदा।
हे आदि अनादि आनंदा।
हे सुख दुख के साथी आनंदा।
हे सर्वव्यापकाए आनंदा।

हे सर्व प्रियाए आनंदा।
हे परम आत्माए आनंदा।
हे करुणा कराए आनंदा।
हे पूर्ण सामर्थाए आनंदा।
हे मन मोहनाए आनंदा।
हे बालस्वरूपाए आनंदा।
हे साईंनाथाए आनंदा।
हे गृहस्थि संताए आनंदा।
हे सर्वेसर्वाए आनंदा।
हे गुरु माताए आनंदा।
हे साईं दुलारे आनंदा।

सदा सदा आनंद गुण गाओ पड़ो गुरु की शरणा।
आनंद नाम जपो जपाओ हुक्म सर माथे धरणा।।

– अंजान

सब सृष्टि का कर्ता धरता तू ही साईंनाथ है।
तू ही साईं बन्धु मेरा तू ही पितु मात है।।

छुप छुप मेरे संग है रहता फिर भी चैन न आए।
कैसी है यह माया तेरी बार-बार भटकाए।।

पल पल मेरी रक्षा करता फिर भी समझ न आए।
नटनी है ये माया तेरी अपना खेल रचाए।।

तू तो है रखवाला सबका तू अनाथों का नाथ है।
तू ही साईं बंधु मेरा तू ही पितु मात है।।

– बलीदेवी चाचरा, नागपूर

Reg. No. 30/09 dt. 20/04/2009
वर्ष ३, अंक ३
श्री रणविर तनेजा द्वारा संपादित एवं प्रकाशित

ॐ श्री साई